पुस्तक का नाम—मन रे मन ही में रम

प्रकाशक —सम्पतलाल, मानिकचन्द, अनोपचन्द
शुभकरण, कमल, राजकिशोर वैद
फोटो —श्री सुमेरमल जी चोपडा की ओर से।
प्रथम पृष्टो मे चार गीतिकाए मुनिश्री की ओर
जिनमे उनके नाम है।

भूलो के लिए क्षमा प्रार्थी हू ।
सहयोगियो का आभारी हू व रहूगा भी

गुलाबचन्द वैद

उद्बोधन

(लय-दर्शण वेगा वेगा दीज्योजी)

(मुनि श्री गणेशमलजी)

लेकर एक धरम रो शरणो
नरभव सफल बणावोजी
समभावां में सही वेदना
कर्म खपावोजी ॥ ध्रुं ॥

वीतराग देव रो शरणो,
तुलसी गुरु गुण गावोजी
दृढ आस्था री नावा सूं
भवजल तर जावोजी ॥1॥

मोह–राग है दुख रो कारण, जिनवाणी अपनावोजी
मोहजीत राजा ज्यूं ममता, दूर हटावोजी ॥2॥
जाप जपो नवकार मंत्र रो, स्वामीजी ने ध्यावोजी
तन री पीडा स्यूं पीडित हो, मत घबरावोजी ॥3॥
नरक तणा दुख सह्या अनन्ता, वाने मत विसरावोजी
समता स्यूं सहकर कष्टां ने, लाभ कमावोजी ॥4॥
पापकर्म री निन्दा कर कर, आत्मा सरल बणावोजी
अंत आलोयण कर आराधक, पदवी पावोजी ॥5॥
खमत खामणा करके मनस्यूं, वैरभाव दफनावोजी
विश्व बन्धुता गंगा सरिता, में नित न्हावोजी ॥6॥
जीणो मरणो नहीं वाछणो, भवजल तिरणो चावोजी
मन री ममता तजकर आत्मा में रमजावोजी ॥7॥
'तृण है जगती-तल में थारो', अन्दर झांक बनावोजी
ममता री बेड़ी ने तोड़्या, शिवसुख पावोजी ॥8॥
त्याग तपोमय सलिल सींचकर, जीवन वन सरसावोजी
'मुनि गणेश' मनडी बातें । भव भ्रमण मिटावोजी ॥9॥

(सक्षिप्त जीवन परिचय)

श्रद्धेय सालमचदजी बैद की पत्नी श्रीमती पेमादेवी ने श्री उदयचन्द जी बैद को गोद लिया। उनके सबसे ज्येष्ठ पुत्र श्री तोलाराम जी का जन्म वि स. 1968 मे हुआ। किशोरावस्था मे ही गगाशहर निवासी श्री डूगरमल जी चोपडा की सुपुत्री आनन्दी से वि स 1982 मे शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। माताजी का देहान्त दो साल पहले ही हो चुका था पिता श्री का देहान्त भी विवाह के कुछ दिन बाद हो गया। गृहस्थी व व्यापार का भार छोटी उम्र मे ही कधो पर आ पडा। ठीक योही श्रीमती आनन्दी देवी को भी नया भार वहन करना पडा।

आपके छव पुत्र—सम्पतलाल, मानिकचन्द, अनोपचन्द शुभकरण, कमलचन्द, राजकिशोर व तीन पुत्रिया—कमला, गवरजा और पुष्पा है जिनका अच्छा खासा व सम्पन्न परिवार है।

श्री तोलारामजी स्थानीय कांग्रेस पार्टी के कर्मठ व निस्वार्थी कार्यकर्त्ता रहे है। अतिथि सत्कार की आपकी सराहनीय भावना थी। आज भी उसी परम्परा का निर्वाह समुचित हो रहा है। आज से करीब पन्द्रह वर्ष पूर्व हेमरेज का इलाज व्यवस्थित चलते चलते भी आपका गुलाबबाग मे स्वर्गवास हो गया।

लम्बा सुव्यवस्थित इलाज व लम्बी सुव्यवस्थित सेवा के बावजूद भी श्रीमती आनन्दी देवी का स्वास्थ्य धीरे धीरे गिर ही रहा था। मुनि श्री गणेशमलजी का तेरापथ धर्म सघ मे अपना अच्छा स्थान है। ससार पक्षीय भाई रहने से भी धार्मिक भावना उत्तरोत्तर वृद्धिगत रही। अस्वस्थता अधिक हो जाने से मुनि श्री के दर्शन पाच साल तक न हो सके। दर्शनो की उत्कट भावना ने पुत्रो की सहमति दिलवादी। साहस बटोर कर शुभकरण व उसकी पत्नी को साथ ले मुनि श्री के श्री डूगरगढ प्रवास मे उनेक दर्शन व सेवा का लाभ ले ही लिया। स्वस्थ्य ने भी साथ दिया पर अचानक रोग का बड़ा आक्रमण हुआ। डाक्टर का इलाज तो चल ही रहा था। उन्हें बुलवाया गया। सुधार होते होते अचानक रोग ने भयकर रूप ले लिया व डाक्टर साहब की उपस्थिति मे ही व सन्तो के मागलिक सुनाते 2 स्वर्गवास हो गया। पार्थिव तन को भीनासर ला उसका दाह—सस्कार किया। शोक निवारणार्थ दसवें दिन बस मे लाडनू जा परिवार वालो ने आचार्य श्री के दर्शन किए। वहा से लौटते समय श्री डूंगरगढ मे मुनि श्री के दर्शन हुवे। स्मृति सभा का एक छोटा सा कार्यक्रम हुवा। कैसेट मे टेप हुइ कुछ गीतिकाए प्रसगवश यहा उद्धृत की गई है। 30-५-86

(राग—तेजो)

सुणता सुणता मंगलीक झट प्राण पखेरू उडग्या हो
अणदीबाई रा भाई चरण मे ॥ आ ॥

बेटी डूंगरमलजी री ही, गंगाणे मे जन्म लियो
भीनासर ब्याही बैदा रे घरे ॥

तोळाराम नाम पतिवर रो, माता छह बेटाँ री हो
धार्मिक सस्कार चढ्या है सातरा ॥

कमला आदिक बेट्या बहुवा, सारी बडी विनीत हो
सेवा सारा ही लोग सरावता ॥

प्रियवाणी देराणी तीजा, बहन कहूं या बेटी हो
देवर या बेटो कहू गुलाब ने ॥

भाई समेरमल सो अणदी बाई रे हितकारी हो
अन्तिम समय मे बाई रे खने ॥

पाल्यो है सम्मान सदा ही अणदी रो सगळा ही हो
सचित पुन्याई रो फळ देखल्यो ॥

समभावा स्यू सही वेदना, शरण धर्म रो लेकर हो
आस्था दृढ राखी सद्गुरु देव पर ॥

त्याग तपस्या सामायक नित नियमा मे बृटताई हो
बाईसी वाळे गोळे मे रह्या ॥

लाग रही ही बहुत दिना स्यूं दर्शन री उत्कठा हो
ज्यू त्यू कर आया छोटा ने उठा ॥

दर्शन करके खुशी हुया है, पूर्ण हुया मनचाया हो
नाचण लाग्यो अन्तर मन-मोरियो ॥

ज्वर रे कारण गह्यो अबे ही ले चालो भीनासर हो
मरस्यूं तो मरस्यूं माई चरण मे ॥

(शेष)

बारस रे दिन साझ समय मे बढी वेदना भारी हो
परभव मे चाल्या म्हारे सामने ।।
मौत इसी बिरला ही पावे, संतां री सेवा मे हो
मानो आ मौत महोत्सवभूत है ।।
मन री मन मे ही रह जाती, यदि लातो शुभकरण नही
पूरी हुई दर्शन री भावना ।।
अणदीबाई रे जीवन स्यू ल्यो शिक्षा सुखदाई हो
ध्याणो है कदेय न आर्त ध्यान ने ।।
दर्शन कर तुलसी गुरुवर रा, धार्मिक सबल ले लो हो
करलो 'मुनि गणेश' आत्मा मे रमण ।।

अणदी बाई की ओर मे कृतज्ञता ज्ञापित
(लय—शोभा बरसे)

गहरा तपज्यो सजम मे, मुनि गणेश म्हारा वीर ।।
नित रहज्यो उद्यम मे, मुनि गणेश म्हारा वीर ।।
दिया सेवा रा मेवा पुरस म्हारे घट मे, भूख—तृपा गई भाग ।।
क गहरा तपज्यो—
साझ दियो सबल वण्यो जीवन रो। कटग्या जन्मा रा ताप ।।
पाच वरस रो विछोह हो दरसण रो। बो अवके हुवो मिलाण ।।
आशा सग विश्वास लेकर आई। गई मिनख जमारो जीत ।।
चित्त समाधी राखज्यो निर्मल मन। महापुरुपा री आ रीत ।।

एक लक्ष्य तो प्राप्त किया ।
आपकी अनुपस्थिति अखरती है।

होनहार को कोई टाल न सका। सिवा इसके दूसरा कोई विश्राम नही ।

आपकी आत्मा को चिर शान्ति मिले श्रद्धानत यही मगल कामना करता हुआ ।

आपका सबसे छोटा पुत्र
राजकिशोर वैद C A

विनम्र भावाजली भेंट करती हुई शुभेच्छा करती है आपके कल्याण की

पता :—
मागीलाल जी सिवो/न 31
जी टी रोड/हवडा

आपकी पुत्रियो मे सबसे छोटी
लाड प्यार की निशानी लिए

(तर्ज–म्हारी नैया खेवनहार)

करणे आत्मा रो कल्याण, आया अणदी बाई
डूंगरगढ मे महाप्रयाण, आया, अणदी बाई ।।

पीहरिए ने खूब दीपायो । सासरिए ने पण चमकायो
पायो सगळा रो सम्मान आया अणदी बाई ।।
डूगरमलजी री सुता सुहाई । तोळारामजी ने परणाई
गगाशहर जन्म स्थान आया
मुनि गणेश रा दर्शण करस्यू । पाच वर्ष री प्यासा हरस्यू
होग्या वाछित सब अरमान आया
बाइसी सू डूगरगढ आया । दर्शण पाया हर्ष सवाया
रग रग नाचे मोर समान आया
सहनशीलता राखी भारी । गण गणपति स्यू ही इकतारी
भोगी वेदना असमान आया
भर्यो पूरो परिवार सुहावे । बाईसी मे बडो गोळो कहावे
च्यार्या खानी नाम महान् आया.... ..
अन्त समय मे अनुपम समता । मगळवाणी सुणता सुणता
निकल्या मुनि चरणा मे प्राण आया
मुनि कन्हैया पायो सुन्दर । धर्म स्थान रो योग मनोहर
अणदो बाई हा पुन्यवान आया.... ....

(तर्ज–नैतिकता की)

अणदीबाई भाई चरणा, आया चाल तरण हो
श्री अरिहंत शरण हो, श्री गुरुदेव शरण हो, श्री जिनधर्म शरण हो

डूंगरमलजी री ही पुत्री अणदी नाम सुहायो
आजीवन तक पीरे सासरे अद्भुत गौरव पायो
रग रग में ही धर्म ध्यान रो, अविचल सदा लगन हो ॥1॥

शय्यातर रो लाभ निरन्तर भीनासर मे लेता
दाइसी गोगो प्रसिद्ध व बाई सी ही रेता
सामायिक संवर रो अंतिम दिन तक पक्को प्रण हो ॥2॥

अंतिम इच्छा पूरी करके मन रा कोड पुराया
सजधज करके ठाट बाट स्यूं सेवा करणे आया
मुनि गणेश रा दर्शण करके आनन्दित कण कण हो ॥3॥

भाई-भाभी, भगिनी-देवर, बहनोई-देराणी
बेटी-बेटो नणद और सेवा में ही बहुराणी
गुणकार सम्मिलित चाल्या झटके विलम्ब कर्यो ना क्षण हो ॥4॥

भर्यो भर्यो परिवार छोड़कर चाल्या अणदी बाई
थारी [illegible] ने सब धारो, [illegible] न दिल कचाई
[illegible] सूं [illegible] वाने [illegible] मन हो ॥5॥

भल ऊग्यो आज प्रभात, गुरु दर्शण पाया

तोलाराम जी भीनासर रा वैद वांरी सन्नारी
डूंगरमल जी गगाणे रा चौपडा सुता प्यारी
अणदी बाई नाम हो मुनि गणेश वारा भ्रात ॥1॥
मुनि चरणा री सेवा खातर, बाइसी स्यू आया
गुरु दर्शण री चाव घणेरी, आऊषो नही पाया
काळ-अहेडी क्रूर अति, धमक्यो सिर पर अज्ञात ॥2॥
परोक्ष मे वे खडा सामने, नमन वांरो स्वीकारो
आशीर्वाद दरावो वाने स्वीकारोक्ति सू सत्कारो
सार्थक यात्रा आ बणे, सुन्दरता पावे बात ॥3॥

भ्राता श्री तोलारामजी की याद मे

क्यो सोचा जल्दी जाना ।
अच्छा नही लगा क्या तुमको हम सब का वहा पर आना ॥

मैंने तो सोचा था हम सब तीनो भाई शीघ्र मिलेंगे
एक बार फिर हृदय-सरोवर मे सारो के कमल खिलेंगे
बहुत तरह की सुख की दुख की बातें करने मे रुचि लेंगे
एक तीन या तीन एक हैं कठिन किसी को था समझाना ॥1॥
किस चिन्तन से सर चकराया, स्वर रूधा तन भी सूनाया
मौन हो गए थे क्यो क्या किसी ही ने था गुस्सा दिलवाया
बहुत दूर गए पहुँच हमारी से भी जो है स्थान अनजाना ॥2॥

भक्ति गीत

प्यासा पंछी आया तेरे द्वार सागर ! उसका हो जाए पूर्णोद्धार ।

एक चोंच भर लेगा उससे कमी पड़े नहीं तेरे

प्यास बुझेगी तृप्ती सखी बन रहेगी हरक्षण घेरे

युगों युगों तक गीत गुणों के गाऊं मुक्तकंठ से

मानूंगा अहसान तुम्हारा, सचमुच बारम्बार सागर ॥1॥

मेरे जैसा तुच्छ जीव दिल के टुकड़े हो जाते

तुम करुणा के सागर हो भक्तों को क्यों बिसराते

मैं जब याद करूं तुम भूलो, कभी नहीं यह जचता

दिल मे दृढ विश्वास मेरे प्रति होगा सद्व्यवहार ॥2॥

बार बार आंखों मे आंसू निकले चोट करारी

धीरज करते युगों बीत गए, सहनशीलता हारी

रहे मेरे तेरे नाम जपने मे तेरे, निश्चय

फिर कैसे दी रोक लगा बनने से नव संस्कार सागर ॥3॥

अरजी पर मरजी कर देना ए मेरे भगवान !

मिले सफलता नरजीवन को, ऐसा दो वरदान

बन रहने मे खुश होकर गुण तेरे नित गाऊंगा

आशा है मानोगे मेरी, छोटी सी मनुहार सागर ॥4॥

सुन्दर सारे काम सवारे, यह छोटा सा काम

बनता होगे मति सुन्दर शीघ्रातिशीघ्र परिणाम

उदाहरण बनकर आएगा, जग के सम्मुख सारा

शुभदृष्टि सारी जागी तेरी हर मनवार सागर ॥5॥

(1)

ऐ मेरे स्वामी ! आवश्यक काम हमारा है
तभी अचानक लीन–सुखो मे–तुम्हे पुकारा है ॥

बच्चो को मांपर त्यो तुम पर मेरा पूर्ण भरोसा
आत्मा ने आत्मा दे आत्मा को आत्मा से पोषा
मेरे पर तेरा उपकार। इसीलिए हू कर्जदार
नही तुमने मुझको नही मैने तुम्हें बिसारा है ॥1॥

मेरी जीभ नाम तेरा नही साथ कभी छूटेगा
अपनापन गहरा लख इर्ष्या वेष बदल रुठेगा
ठहरा तेरा दीवाना। पा तुमसे पीना खाना
सुन्दर अति सुन्दर ढग से चल रहा गुजारा है ॥2॥

तार तुम्हारे मेरे बीच का बना हुआ फौलादी
नही जग व नही टूट की गारन्टी दिलवादी
मस्त बना उठता झन्कार। तेरी कृपा की बजे सितार
निज कर से घड घडकर तुमने जिसे सवारा हैं ॥3॥

वास करो मस्तिष्क मे मेरे, रुक जावे बहकाव
चिन्तन के हरक्षण मे पैदा हो कल्याणक भाव
बनी रहे मेरी मुस्कान। अमर रहे तेरा वरदना
सुखे सुखे भवसागर का पाजाऊ किनारा है ॥4॥

मेरे लिए सर्वश्रेष्ट है बनना तेरा दास
इसीलिए तो शरण तेरी पर आश्रित मेरा विकाश
जब जब याद तेरी हो ताज। बजने लगता आनन्द बाजा
तुम पर अति विश्वास करोगे शीघ्र सुधारा है ॥5॥

ठीक समय पर काम बना । तभी तो स्थिर सुख धाम बना
दिल का हाल बताऊ । मै जरा नहीं सकुचाऊ ॥ म्या ॥

मेरे पे अहसान बना है तेरा दिया वरदान
तेरा वह वरदान मेरे हित बन गया कृपा–निधान
सुसम्पन्न मेरे वे होते मन मे उठे अरमान
अपना तुम्हे बनाऊ । घट मे बस जाने मनाऊ ॥ 1 ॥

आशा की अट्टारी पर विश्वासो का मीनार
आशा की वीणा मे है विश्वासो का झन्कार
सुहावने स्वर निकल रहे है ज्यो देते उपहार
आगे वह मस्ताऊ । ना इच्छा है सुस्ताऊ ॥ 2 ॥

सौभागी मानू अपने को जब तेरी हो याद
मिट जाता मस्तिष्क मेरे का सारा ही उन्माद
भर देता है जाप तेरा मन मेरे मे आल्हाद
बन तन्मय गुण गाऊ । गा गाकर तुम्हे रीझाऊ ॥ 3 ॥

शुभेच्छा हो मेरी सफल, पा तेरा आशीर्वाद
ज्ञानगाव मारा मिटवादो ज्यो सोना वेखाद
मन विजय का तेरी कृपा से गूज उठे शंखनाद
प्रगति यह कर पाऊ । चरणो मे शीश नमाऊं ॥ 4 ॥

रहे न भाता गभव समय, जो व्यतीत हो गया कल
जिसके द्वारा मिला मुझे था दिया तेरा सबल
यह ही तो आगार बन सका । बना जरा निश्छल
भावो का हार सजाऊ । समवित तुम्हे पहनाऊं ॥ 5 ॥

चाहते हो तुम मुझे जगाना । यही आलस व प्रमाद भगाना
सबसे बढकर उपकार तेरा । यो हो जाएगा सुधार मेरा ॥ स्था. ॥

किसे पडी है आज कोई भी, सुख अपने को छोड
अति महान् रहते भी इक अदने से नाता जोड
बात अजब यह तेरा मेरा बना हुआ सम्बन्ध
याद तुम्हें करना सुन्दर श्रृंगार मेरा ॥ 1 ॥

भटक न जाऊ पथ से, ज्योति इसीलिए दिखलाते
भूल न जाऊ इसीलिए चिन्तन सारा लिखवाते
तुमने दी जो यह सम्पति है, सबसे खरी कमाई
बना दिया यह जीवन है गुलजार मेरा ॥ 2 ॥

परोक्ष मे भी नत मस्तक हूँ, याद तुम्हारी आगे
सुप्त खुशी जग जाती व मायूसी सारी भागे
मुश्किल से पाया जाने वाला पाया है तत्त्व
गाऊ, जपू जगे चिन्तन बारम्बार मेरा ॥ 3 ॥

महती कृपा रही यदि तेरी, बढ पाऊ दिल खोल
बनू आचरण से विशुद्ध हृदयगम कर तेरे बोल
पकज कमल बने जल ऊपर जैसे रहे तैराता
तेरा दास हू निभ जाए यह करार मेरा ॥ 4 ॥

सफर मेरी बढती जाए आगे से और भी आगे
असली मजिल पाने हित बढू पिछली सारी त्यागे
चरम लक्ष्य हो जाए अपना यह छोटी सी चाह—
प्राप्त कर सकू । वही तो पूर्णोद्धार मेरा

गर्मी मे अकुलाए को क्या चाहिए ?

ठंडी छाया, मीठा पानी । शरण मे आया, रहे निगरानी ॥

तुम कल्पतरु की छाया । मैं पथिक ताप मुरझाया
शरण तुम्हारी पाजाने भटकत भटकत हूँ आया
तू ज्ञानी मैं अज्ञानी । न तो किस्सा नही कहानी
मेरी आदत है वचकानी ॥ 1 ॥

मैं हूँ मरुधर का वासी । तृष्णा मेरी है प्यासी
जनम जनम मे प्याऊ ढूंढत आई अधिक उदासी
जल शीतल-मृदु पिलादो मुरझे दिल को सरसादो
तेरे लिए सब है आसानी ॥ 2 ॥

मैं तो साधारण प्राणी । तुम हो महान वरदानी
तुम दाता याचक मैं तेरा, स्थिति यह लगे सुहानी
पूरी हो सभी जरुरत, अति दूर भागती किल्लत
अड़चन बाधा हो लचखानी ॥ 3 ॥

समतारस-घोट पिलादो । या संकट कष्ट मिटादो
बन जाए गति प्रगति असली मंजिल सह मिलवादो
सच्ची है यही सफलता, पाजाऊंगा अलबत्ता
कोई किए बिना कुर्बानी ॥ 4 ॥

सुफलित होवे जिन आशा व गुणगायक हर स्वासा
सुराग जीवन का हो जाए, चाहूँ यही दिलासा
अमन-प्रसन्नता पाऊ, तन-मन को सफल बनाऊ
अवस्थिति यह ही लासानी ॥ 5 ॥

आर्यवर ! ऐ देवते ! मेरा सभक्ति लो नमस्कार
दूसरी हित यात्रा चालू । प्रथम मजिल करदी पार ।।

हाथ तेरे लाज मेरी, आश का तरुवर फला
इसी माध्यम से नया इक आज का अवसर मिला
नई शैली नई उक्ति नए ढग का स्वर हो प्राप्त
मार्गदर्शक बुद्धिदाता, रचना के हो रचनाकार ।। 1 ।।

लीन तुममे रह सकू, अच्छा तरीका पालिया
मौन रहने चला था गुनगुनाया चट गा लिया
तम मे ज्योति गम मे सरगम खुशी की तुमने भरी
प्रार्थना है एक तुमसे करदो पतित का उद्धार ।। 2 ।।

काम है मेरा न केवल, तुम्हारा भी मानलो
बिनती स्वीकारोगे पक्की बात दिल मे ठानलो
ना कमी तेरे है कुछ भी, इक इशारा यदि करो
पूर्ण हो अभिलाष झकृत हो सके बीणा के तार ।। 3 ।।

माग पूरी एक हो उसके दू पहले अन्य कर
सफलता पाऊ सभी मे दे दो ऐसी खुश खबर
तभी तो बिन रूके सके भी सफर पर बढता रहू
जैसे कोई दिल से देता, विना वापिस की उधार ।। 4 ।।

बात दिल की कहूं इसमे मिलावट कुछ भी नही
नीद से जगने पे जैसे सोच लेता सही सही
तजे आलस उठे उसके मस्ती साथ सदा रहे
लगे सरपट दौडने ज्यो अश्व, अच्छा यदि सवार ।। 5 ।।

ओ मेरे रखवाले ! सोई नींद उड़ाने वाले
मेरे हो सुखधाम । तुमको सविनय प्रणाम
है तेरा मुझ पर बहुत बड़ा अहसान
पर पाना उसको कदापि नहीं आसान ॥ स्था ॥

बेसुध नींद मौत की छोटी बहन यही व्यवहार
अल्प समय मे श्रम की थकावट, देती शीघ्र उतार
आलस भी उसका ही भाई । बना रहे खुद ज्यो परछाई
उठने मे बाधक बन जाता आकर वह शैतान ॥ 1 ॥

ठीक समय पर तुम ना भूलो, शीघ्र नींद उड़ाते
अनुभव मेरा बढ़े निरन्तर, शिक्षा पाठ पढ़ाते
भिन्न तरह से हो समझाते । दुर्लभ तत्त्व प्राप्त करवाते
गोद नींद उठवादेना मा वृहत्तर वरदान ॥ 2 ॥

वरद हाथ की छाया से हर लेना आता ताप
मुर्झाहट ना आने पावे, मिट जाए सताप
शरण तुम्हारी का हो वासी । आत्मोत्थान मिले अविनाशी
चाहे जैसी भी स्थिति आए, ना छूटे मुस्कान ॥ 3 ॥

तेरा भजन-आरती कल्याणी, ऐसा दृढ विश्वास
सद्बुद्धि-सद्ज्ञान प्राप्त हो, मिटे भौतिकी प्यास
आजाद का बनकर राही । मंजिल पाऊंगा मनचाही
सुबह सीख यही तो सीखी बनने हित इन्सान ॥ 4 ॥

अपार शक्ति तेरी, मेरी माग बिन्दु के जैसी
तो पचास मे भी तृप्ती तुम दो हजार मे वैसी
फिर तो विश्वास गुजारे मेरा । दिल है बहुत उदार तेरा
अलौकिक मेरे तो तुम जाने माने भगवान ॥ 5 ॥

हर सास मे है विश्वास तुम्हारा ऐ आश।
एक जीभ से कैसे कर पाऊगा उसका खुलासा ॥

नही कल्पना कोरी पर आवाज अन्तर की
क्यो देगा दबाव कोई नही बात है डर की
शात स्वत हो दिल मे उठ गई किसी के जिज्ञासा ॥ 1 ॥

सहज मिटे शका न जरुरत मुझको वोलन की
लिखे कलम स्वयम् न जरुरत दवात खोलन की
रहा नाम से जीभ मेरी का नित्य ही सहवासा ॥ 2 ॥

मै पतग सम उन हाथो मे जिसकी डोर थमी
उडान मनचाही भरने नही आई कोई कमी
विन मागे ज्यो पडे दाव पौ बारह का पाशा ॥ 3 ॥

हर सास और हर रोम मेरे है तेरे आभारी
तुम जो वने हुए मेरे हर प्रकार उपकारी
पूर्ण सत्य यह वात न माने कोई तमाशा ॥ 4 ॥

आई नाव किनारे जरा देर का और है काम
जरा और आगे मिलने वाला शाश्वत विश्राम
ज्योति ज्योति मे मिले ज्यो मिलता पानी पताशा ॥ 5 ॥

फिर भी दिल की झोली तेरे आगे दी है पसार ॥4॥
तुम न सुनो फिर कौन सुनेगा मेरी करूण पुकार
भोले-भाले भक्त पे बनता होता पूर्ण उदार
मन-मदिर मे बसो अगर, होगा मेरा उद्धार ॥5॥

कैसे तुम्हे भुलाऊ मेरे स्वामी, कैसे तुम्हें बिसराऊ
तुमसे ही पाया है सब कुछ, फिर भी तुमसे पाऊ ॥ स्था ॥
जब जब भीढ पडी तब तब तुमसे ही मिला सहारा
उलझ गया यदि समय तुरत तुमने आ उसे सवारा
सबल पाया जाप तेरेसे, क्या उसको गिनवाऊ ॥1॥
रुक जाए कोइ काम अगर, तुम उसको हो बनवाते
विगड जाय कोइ वक्त अगर, तुम उसको हो बनवाते
वाकी मेरा पडा समझना, जग को क्या वतलाऊ ॥2॥
कहा जा सके रहस्य उसको बतलादू मै कैसे
प्रथम आहार पे जीवन टिकता, तेरा जाप है वैसे
गाता आया हू गुण तेरे, आजीवन हो गाऊ ॥3॥
तुम बिन कौन सहायक वनता, मुझ मूरख के त्राता !
आज सभी साथी बनने हित जोडन चाहे नाता
चाहे जग जैसा भी जाने, दास तेरा कहलाऊ ॥4॥
जरा नही अत्युक्ति इसमे, दिल के भाव है आशा !
बिन पूछे ही कर देता मै इसका जरा खुलासा
पूरो अतिम माग 'ज्योति, आनन्द मे शीघ्र समाऊ' ॥5॥

भूलो न जाए मेहरबानी तुम्हारी
छूट न पाएगी निशानी तुम्हारी ॥ स्था ॥

[illegible] जा रहे, देते रहोगे । सभाल मेरो लेते रहोगे
हूँ तेरा तो आशा भी तुमरो, नित ही नई हो कहानी तुम्हारी ॥1॥
हुवा है ऐसा वार वार मे, तभी तो आया हू मुवार मे
आप शान हुई बहुत पुरानी, मेरी यह आदत सुहानी तुम्हारी ॥2॥
सर मेरे जिसका वरहाथ होगा, वही मेरा तो कुशलनाथ होगा
भूखे को भोजन दे, भटके को मार्ग दिखाएगा, करुणा लाशानी तुम्हारी ॥3॥

जरा सी दो भक्ति तेरे चरण मे, स्थान दे दिया अपनी शरण मे
वत्सलता ऐसी दिखाए कौन मुझपर, मेरे लिए दी आसानी तुम्हारी
जीवन का सौदा यह तुमसे किया है, मनचाहा दाम उसका ले लिया है
सवर्ग तुम्हारा हुआ पूराकापूरा, फिर न चलेगी मनमानी हमारी

[illegible] ताने खड़ा कोई, यदि धूप तेज भी चल रे
बिना पाँव बिन रुके चलो ते, शिक्षा का सबल रे ॥ स्था ॥
[illegible] अड़चन बाधाए है, आती और रहेगी
[illegible] भी उलटी सीधी, ठगने तुम्हे बहेंगी
[illegible] बिना खोए चल, सुवरा होगा कल रे ॥1॥
सम्मोहन भी तुम्हे फसाने, बूने ताना बाना
[illegible] गलती भी करवाना, साध रहा है निशाना
[illegible] पहले की हो, सुन्दर देगी फल रे ॥2॥
होगा कुछ तो श्रम अपना भी, होगी कुछ रखवाली
[illegible] का निश्चय ही, दे देगा खुशियाली
[illegible] छूटे पीछे, आत्मा बने सबल रे ॥3॥

अद्वितीय रक्षण उनका है, सकट होते दूर
सम्मुख मंजिल अवश्य आए, है विश्वास जरूर
ज्योति मे ज्योति के मिलने, आत्मा हो उज्ज्वल रे ॥4॥

सार्थकता यह ही नरभव की, जीवन निजी सुधारो
स्वागत है यदि मृत्यु आए, अपनी को सत्कारो
यह ही सुन्दर चिन्तन होता, क्रिया यही असल रे ॥5॥

तुम्हारी सीख बनी है ज्ञान, तुम्हारा अमर हुआ वरदान
तुम्हे मैं याद करता हू । एक फरियाद करता हू
कि सच्ची चाह पाजाऊ । कि अच्छी राह पाजाऊ ॥ स्था ॥

नही चेलेन्ज कोई कर पाया, अटल रही गभीरता
एक कदम भी नही मुडे गाने लायक अति वीरता
कर लिया हसते विषका पान । मौत मर गई होकर वेजान ॥1॥

नही चढाई पर हषए, मानो मन को जीत लिया
उतार पर नही शिकन, सकल सादा जीवन व्यतीत किया
उदाहरण पाएगा सम्मान । भरेगा दुखियो मे मुस्कान ॥2॥

रहे तुम्हारा वरद हाथ मेरे सर पर साया करता
मगल–आशीर्वचन नित्य मेरे मन को भाया करता
आन पर होने को कुर्वान । रहू हरक्षण तत्पर लू ठान ॥3॥

याद तुम्हारी ताजा हो नित आगे वढता रह पाऊ
कर्मों को यदि मार पडे हसता हसना उसे सह पाऊ
वन सकू एक सही इन्सान । कर सकू जीवन भर गुणगान ॥4॥

तेरा तो कल्याण हुआ ही, मेरा भी होगा कल्याण
हसते गाते धूमधाम से तव कृपया हो महाप्रयाण
रहे साथी मेरा सद्ज्ञान । यही विनती मेरी लो मान ॥5॥

दिया तुम्हारा हो सभलाता । अधिक नहीं कुछ मुझको आता
भूल चूक उस पर भी होती । जानबूझ उनको है न्योती
फिर भी बहुत खुशी है आज, स्थितिया पाईज्यो हो वपौती
अवश्य मिले तुम जैसा दाता । मेरा तेरा यह ही नाता ॥1॥

जुड़ा हुआ क्रम कभी न छूटे । नाता बना हुआ ना टूटे
रहो बचाते प्रमाद आलस । सद्गुण कभी न मुझसे रुठे
तेरा ही आश्रय है त्राता । रहू इसलिए तुमको ध्याता ॥2॥

पशु से मानव है बनवाया । प्रयोग ऐसा अति सुखदाया
पाव बढाए चलता आगे । तेरा सेवक हू कहलाया
दया दिखाते रहो विधाता । ऐसा क्रम मुझको को अति भाता ॥3॥

बहुत जरुरी है यह काम । लेता मान इसे विश्राम
स्फूर्ति से अपनत्व जुडेगा, छूट जाय प्रमाद हराम
[illegible] उसमे यो छुडवाता । यात्रा दिन पग आगे बढाता ॥4॥

भेंट तुम्हे करना यह तेरी । निजपना कुछ भी ना मेरी
बाकी असल न यह केवल ब्याज । फिर भी देने मे हुई देरी
गुण तेरे नित प्रति हू गाना । इसमे जरा न मैं सकुचाना ॥5॥

[illegible] अमर [illegible] तुम्हारा । रहे अमर वरदान तुम्हारा ॥ ध्रुव ॥
तुमने दिया है, मैंने लिया है, कृपा रूपी वर दान
मैंने दिया है, तुमने लिया है, [illegible] एक भगवान ।
मेरा नमन तेरे चरणों मे, सुगति पाने सहारा ॥1॥
[illegible] स्वामी कहो मिलेंगे, [illegible] ने बन जाए
[illegible] थोडा देते [illegible] जो [illegible] [illegible] काम आए
[illegible] इसलिए गुणानुवर्णन [illegible] [illegible] ॥2॥

प्रशस्ति नही केवल तेरी, मेरा अपना काम
दुख सकट पर वक्त जरूरत याद दिलती नाम
एक बूद सरोवर बनता, मेरा जीवन सारा ॥3॥
शब्द नही हैं मिलते ऐसे जिनसे कर दू उपमित
गुण तेरे मे भरे पडे हैं, शब्द एक 'अपरिमित'
केवल भेंट चढाता हू दिल, भजन जाप के द्वारा ॥4॥
रही दया तो जीवन मेरा, निश्चय सुधर जायगा
'काम करे से अमर नाम हो, सुयश प्रसर जायगा
अदना भी आला वन सकता, पाकर तेरा इशारा ॥5॥

यह है मेरी सावना । आराध्य प्रति आराधाना ॥ स्था ॥
यह तन तेरा, यह मन तेरा, चिन्तन अच्छा वह सब तेरा
पूर्व रात बीतन से पहले, प्रगटा नया सवेरा
विघा एक पाई है जिससे रहू सदा खुशमाना ॥1॥
तुमसे जुडता हू हल्कापन, होता रहता तब महसूस
खाली प्याली मे पीने, दी डाल मधुर पीयूप
छोटे वच्चे वत् मुझमे, भर दिया दानापना ॥2॥
पता नही क्या जादू तुममे, सुमर सुमर पाता आनन्द
तैयारी पाने अप्राप्त की, करता हू मैं अमन्द
मुझको तुमसे तुमको मुझसे यो, हो जाता है बांधना ॥3॥
तुम यदि ना आते तो मेरा, क्या होने वाला था हाल
सिर पर आलस व प्रमाद का चढ बैठा था ववाल
तुमने आकर खिला दिया मेरा सूखा उपवना ॥4॥
नही भूलने वाली वात यह, तुम जो वने सहायक मेरे
यही आज का समय वताए, जो अति शुभफलदायक मेरे
वार वार सुमरू नतमस्तक तुम्हें वद्धकर महामना ॥5॥

तेरी सीख हमारे खातिर, डाड और पतवार
वडा सहारा मिलता जब हो तेज धार वयार
बच ही जाता है बिगडना ॥4॥

तेरी सीख हमारे खातिर, पाख बने आकाश मे
चिंतन की उडान सुन्दर हो जाती है अभ्यास मे
सही होता मूल को पकडना ॥5॥

● ● ●

एक बूद दे दो ऐ सागर । भर जाए मेरा घट गागर
आशा फल जाएगी पूरी । बने निकटता जो थी दूरी
मार्ग सरल पाजाऊ । केवल तुमको फिर ध्याऊ ॥ स्था ॥

फैला विष सारे ही तन मे । ऐसा रगडा इस जीवन मे
अमृत की इक बूद पिलादो । इच्छा वनी हुई यह मन में
मरना अमर वनाऊ ॥1॥

विस्तृत अति ही तम का घेरा । स्वार्थ जमाए बैठा डेरा
हतप्रभ सा दिमाग हो रहा । कहा से हटू लूं कहा वसेरा
सभलू ज्योति यदि पाऊं ॥2॥

करना अपार जीवन छोटा । खुल जाए चिन्तन-परकोटा
सुव्यवस्था की शुभ दृष्टि से । पडने पाए कोई न टोटा
उपकृत हो गुण गाऊ ॥3॥

सरल वने टेढा पथ अपना । कायम रह जाए तुम्हे जपना
मजिल असली प्राप्त कर सकू । चालू हो आनन्द पनपना
निज सौभाग्य सराहू ॥4॥

लूं निकाल नरभव का सार । जाएगा हो जीवन सुधार
लक्ष्य निकटतर आता जाए । प्राप्त करु ऋतु सदा वहार
सुगति सुवास वनाऊं ॥5॥

ज्योतिमय थे चाद सितारे । मिलते उन्हें जो तुम्हे पुकारे ॥ स्था ॥

शिक्षा तुम्हारी का उद्योत । वत्सलता से जो ओतप्रोत
देकर छुडवाया अंधियारा, हट गए बादल जो थे कारे ॥1॥

श्रेय उन्ही को जो हैं दाता । मेरे तो सचमुच वे भ्राता
बहुत सुधार किया है मेरा, अपनापन ही काम सवारे ॥2॥

शुभदृष्टि मेरी समदृष्टि । रहे संतुलन सही की सृष्टि
सरल मार्ग दे आगे बढाओ, मेरे पथ दर्शक उजियारे ॥3॥

नाव मेरी लग जाए पार । निश्चय हो मेरा उद्धार
मानव जीवन की सार्थकता, गहर ई से अगर विचारे ॥4॥

छोटे की छोटी सी भक्ति । वत्सलता की अपूर्व शक्ति
पूज्य पुजारी का नाता यह, गिरते को भी शीघ्र उबारे ॥5॥

● ● ●

मन मंदिर मेरा राजा हुआ, अति सुन्दर इक तस्वीर
उसके दर्शन किए यदयपि तस्वीर ज्यो भरी लकीर ॥ स्था ॥

एक मे एक आला परन्तु उसका सुन्दर आलापन
कलाकार की कला निराली से है गई माना बन
एक दूसरे को जोड़े, कड़ियां बन गई जंजीर ॥1॥

बिन देखे भी देखा है मैने उनको कइ बार
नैनों मे नैनो को मिलना, एक अनोपम प्यार
कई बार शून्य में सुनी गई उनकी तकरीर ॥2॥

बड़ा सुहाना दृश्य है लगता, नैनो को अभिराम
आत्मा को सुधार है मिलता, नाता सुबह शाम
परम बाग मे आती हो ज्यों, सौरभ-युक्त समीर ॥3॥

देखी अति तस्वीरें फिर भी वह अपने में एक
उसको देखत ही जग जाता, मेरा सुप्त विवेक
लिए मेरे वरदान से कम नही, सच्ची सच्ची बात
अति शुभ शकुन रहा होगा जब हुई उसकी शुरुआत
मेरा मन बगला बन गया जो पहले रहा कुटीर ॥4॥

जीवन सफल बनेगा मेरा, 'हा' भरदो भगवान
यही किया अहसान मेरे हित, हो सुन्दर वरदान ॥ स्था ॥

व्याप्त ठसाठस भौतिकता का नाम ही है ससार
छुटकारा कहा है उलझनो से, अतर आख उघार
सत्य–झूठ पर निर्णय लो यह विवेक का सम्मान ॥1॥

स्वारथमय जग मे रह उससे न अछूता बच पाएगा
यदि सहयोग मिला सौभाग्य का, सुघर अवश्य जाएगा
सद्प्रवृत्ति प्रगटे दुष्प्रवृत्ति का होगा अवसान ॥2॥

कला एक सुन्दर दे दी यह, रहु भक्ति–तल्लीन
जान असत्य जगत नाता, उससे बनू उदासीन
कानन–सत्य प्राप्त हो छूटे मिथ्यामय–बीयाबान ॥3॥

तेरे मार्ग दिखाए पर ही बढने होऊ अग्रसर
मिले सुयोग का लाभ प्राप्त करलू जो अतीव सुन्दर
आशीर्वाद सुफलदा होकर बनवा दे अम्लान ॥4॥

मेरे इस मानव जीवन का श्रेष्ट श्रेष्टतर काम
भव भव भ्रमण मिटे पाजाऊ अपूर्व ज्योतिवान
बन जाए चिरस्थाई जो साक्षात् करू सद्ज्ञान ॥5॥

रमें हाथ धो पीछे पड़े हैं। राह रोकने अड़े खड़े है
आगे बढ़ू या देखू पीछे। यही फसाने वाला चक्कर ॥ 1 ॥

शिक्षाएं तेरी अति गहरी। समय समय पर बनती प्रहरी
अबोध को जाने समझाना। आता क्रम नूतन यो खुलकर ॥ 2 ॥

बल तेरा नित साथ चल रहा। वही जोश मे होश भर रहा
कुछ विलम्ब हो जाए फिर भी। सुव्यवस्थित रहे निश्चय सफर ॥ 3 ॥

कृपा तुम्हारी का कायल हूं। इनपाया जो सहज सरल है
जगा और प्राप्ति की चाह। तभी बने जीवन यह सुन्दर ॥ 4 ॥

सब रोगो का जाप इलाज है। सुधर जायगा मेरा आज है
हो जीवन मेरा सगीतमय। तेरे स्वर ही तो मेरे स्वर ॥ 5 ॥

● ● ●

थामा तेरे हाथ छत्र की, बढ़ने म सहयोगी
पाकर उसको ही चलना है, आज बना सजोगी ॥स्था॥

तेज धूप की गर्मी मे चलना पड़ता पर मुश्किल
बिना परिश्रम ही मिल जाए सोचू मुझको मजिल
यश सहारा तेरा ही वैसाखी मेरी होगी ॥ 1 ॥

वर्षा की बौछार तेज, चोटें मारे कंकर भी
शरण तेरी विश्राम मेरा, मैं मौज मानता घर भी
भला भला बनूंगा तेरी औषधि से मैं रोगी ॥ 2 ॥

ठंड में है पड़े ओस, कपड़ा भीगन तैयारी
पर रहा पहले से ही तन, दया रही न्यारी
जाप नाम का बचा सके जो यह गुरु महायोगी ॥ 3 ॥

पैरो की कमजोरी सम्मुख पर्वत सी ऊंचाई
फिसलन भी है जगह जगह व चुभन और तिरछाई
जोश–होश भरदो मुझमे, बन जाऊ जो उद्योगी ॥ 4 ॥

टीबे हैं बालू के धस फंस जाते हैं पैर
मानो किया हुवा है मेरा उनसे कोई बैर
फिर भी बढना जारी है, काया हो जाय निरोगी ॥ 5 ॥

● ● ●

आशा के विश्राम आवो ! दुखिया के आराम आवो
आवो मेरा मन मन्दिर तैयार । करू मै अरजी बारम्बार ॥स्था॥

सकट टाला है बहुतो का, घुसगया उनमे मैं भी एक
तेरे कुछ न कमी पडने की, एक से ना होता अतिरेक
जीभ पे तेरा नाम आवो ।दु। जाए सुधर सारे सस्कार ॥

परिचित हैं जो अनतभव के, जल्दी कैसे छूट सकेंगे
धारावाहिक चले आ रहे, इक दिन मे वे कैसे रुकेंगे
रोको, करू प्रणाम आवो ।दु। पा मैं जाऊ अपार का पार ॥

दास चरण का शरण तुम्हारे, बन जावो इसके रखवाले
मानव बना दिया है पशु से, अश-कला अपनी का डाले
सुन्दरतर परिणाम आवो ।दु। जानू ससार को निस्सार ॥

जीवन मेरा बन जाएगा, हो सकता है देर सबेर
सभावित ऐसा ही लगता, उदाहरण मिलते हैं ढेर
स्मृति मे आठो यामआवो।दु।छोड़ू स्वार्थ से लिप्तविचार ॥

ध्याया उसने सब कुछ पाया, आशा के सग सग विश्वास
जो शक्ति सम्पन्न रहे वे पूर्ण करें सबकी अरदास
हरने कष्ट तमाम आवो ।दु। रहे विकसित सदाबहार ॥

तेरे मेरे बीच तार से निकले इक झन्कार
मै भी मस्त बनू जाए बन मस्त सुननहार
मुझ पर तेरी कृपा दृष्टि का हो सुन्दर परिचायक ॥ 4 ॥

हाथ पकड ले चलो तो उसी स्थान पे जहा किनारा
चाह यही इक मेरी तेरा मिलता रहे सहारा
वही सुफल प्रतिक्षण होगा जो जीवन का उन्नायक ॥ 5 ॥

□ □ □

ऐ आशा ! तेरा मै प्यासा ऐ आशा । तेरी महर का नीर पिला दो
दे नूतन जोश जिलादो तैर कर करदू पार उजाना मानता रहूँ तेरा अहसा

कुछ तुमने दिया मरते से जिया आत्मा से कहूँ आत्मा की कहानी
उपदेश कहा । मै बचता रहा । है यही तेरी तो सही निशानी
सच कहता हूँ । खुश रहता हू । प्राण वही वरदान ॥ 1 ॥

राह सीख है । ज्ञान भीख है । पाकर जिसको मैं हूँ बढता
सदा बसत । खुद है अनत । शिखरो पर तक मैं हू चढता
हू हर्षाता । जब पा जाता । मृदु तेरी मुस्कान ॥ 2 ॥

घडी जाप की । कृपा आपकी । लिखता या गाता हू
रहे शीश । तब शुभाशीष । प्रतिपल जिसको पाता हू
ले लो भक्ति । दे दो शक्ति । ज्यो ज्योति दे भास्वान ॥ 3 ॥

मैं तेरा दास । जागा विश्वास । इसीलिए मैं तुमको सुमरु
तुम हो प्रभात । भगाई रात । इसीलिए न जरा भी डरू
शीघ्र आजावो आलस भगावो । दया करो दयावान ॥ 4 ॥

यदि मेरी सुनें । तो काम बने । भवसागर को करदू पार
करो सुरक्षा । दे सद्शिक्षा । जिससे होवे पूर्णोद्धार
मन-बाग खिले । पद परम मिले । पाजाऊं सर्वोत्तम ज्ञान ॥ 5 ॥

तुम्हारे ही बल पर चलता रहता हूं नित ही आगे
तै होती मंजिल पर मंजिल, बढता पिछली त्यागे
एक निराली बन जाएगी, इससे अमर कहानी ॥3॥
बने मेरे तुम रक्षक यह पूरा मेरा सौभाग
तभी नींद तज जल्दी–2 जाता हूं मैं जाग
चिन्तन नया नया पाने मे होती है आसानी ॥4॥
कृपा तुम्हारी बनी रहो तो मेरा हो उद्धार
जल्दी मिल जाएगा बेशक, भवसागर का पार
सर्वश्रेष्ट उडान यही, कहलाती है आसमानी ॥5॥

कैसो अच्छा तेरा वरदान । मुझ मे भरी अटूट मुस्कान ।

मैं चलता या तुम बढवाते, मुझको जरा न पता
मै खिलता या तुम खिलवाते, देना प्रभुजी बता
मेरे सहायक मेरे अनुमाम ॥1॥
ऐसा कोई हो सकता क्या ? अदनो से बध जाता
स्वाभाविक है कष्ट पडे पर दे मुस्कान मुस्काता
बहुतो से भी तुम हो महान् ॥2॥
नमन करू कर जोड़े सिवा न इसके मेरे पास
इतने मे सतोष करोगे, आशा के विश्वास
मस्ताऊंगा तेरा गुणगान ॥3॥
तुम बिन कौन सभाले ऐसे उछृखल प्राणी को
निश्चय गौर करोगे मेरी, विनय भरी वाणी को
बनादो मुझको सुगुणवान ॥4॥
इर्ष्या–स्वार्थ भरा जग है बिन गरज न पूछे कोई
'हा मे हां भरते' भी सारी उम्र अगर है खोई
तो भी चाह से न दे सम्मान ॥3॥

नधेरा हो गया अब रात गई। हुई है आज लेकिन बात नई॥

मेरे मालिक ने मेरी सम्भाल ले ली है तुरत
सौभाग्य के आगे लगे हट गए बुरे परत
यही थी जिसकी मेरे बहुत ही सख्त जरुरत
नया दिन शुभ उदित है लिए सौगात नई ॥ 1 ॥

रटना जिन्हें था याद मैं उन्हे भूल बैठा
मेरे दिमाग मे मानो कोई इक कीडा पैठा
तभी गर्दिश ने आकर मार दिया मेरे चमेटा
बाद मुद्दत के हुई है ज्यो मुलाकात नई ॥ 2 ॥

हुई मेरी भूलो को जल्दी माफ करदो
लावो नो आराम योंकर मेरे घट को भरदो
भूलू कभी न तुमको शानदार ऐसा वर दो
मुझ पे पीत पर हो जाए सुखद बरसात नई ॥ 3 ॥

लिए बैठा हूँ तुम पे आशा का अटूट विश्वास
शक्ति तुमने जो दी उसी से करता रहता प्रयास
कदम आगे बढाऊ करू मंजिल को अति ही पास
हो जाए मेरे द्वारा यह भी करामात नई ॥ 4 ॥

नहीं भूल सकूंगा अहसान तुम्हारा अन्तर्यामी
[illegible] प्रसन्न कहलाऊ सदा तेरा मैं अनुगामी
[illegible] मैं अधिक पाया [illegible] आगामी
हुई है यह सी अजब कोई शुरुआत नई ॥ 5 ॥

मै वून्द एक तुम हो सागर । मै हूं अणु जैसा, तुम आगर ॥ स्था ॥

अच्छा तेरा चरण सहवास । मान मुझे लो अपना दास
वस जावो यदि मन मन्दिर मे, सब पाऊगा तुमको पाकर ॥ 1 ॥

मै हू अदना भोला भाला । जानू केवल जपना माला
प्रगति सचमुच हो जाएगी । तेरा सहारा प्राप्त हो अगर ॥ 2 ॥

भक्त और भगवान का जोडा, जाए कभी न यह नाता तोडा
स्थितिया तब अनुकूल बनेगी, नही पनपने पाएगा डर ॥ 3 ॥

जाप जपूं यह मेरा काम । इसको ही मानू विश्राम
आत्मानन्द शीघ्र प्राप्त हो । खिलजाए मेरा अभ्यन्तर ॥ 4

चमत्कार सा कहलाएगा । शरण तुम्हारी यदि पाएगा
सशय को नही स्थान जरा सा । ऐसे बन जाना हो सुन्दर ॥ 5

● ● ●

तुम्हारा है विशाल अहसान । तुम्हारा बेमिशाल वरदान ॥ स्था ॥

अतुल्य सहयोगी थे हुए, अहसान उसे ही मान लिया
दे न सके दूजा कोई, वैसा तुमने बरदान दिया
आते ही वह घडी याद गूजे जीवन सगान ॥ 1

बना उसे आधार मानता, मन की मौज व मस्ताई
आलस प्रमाद तज उठता, स्वाध्याय करन की सुध आई
प्रशस्ति हित शुभअवसर मिलते छा जा मुस्कान ॥ 2

ऋजुता रहते भी रहस्यमय जानें मुझको सदा सदा
विवेक मेरा यही बनाए, पर हो भूल भी यदा कदा
लक्ष्य बनाया यही एक, बन पाऊ मैं इन्सान ॥ 3

यही ज्ञान है यही भान है, मान लिया जीवन उत्थान
परम तत्त्व इसे ही मानूं, अन्दर बाहर रहूं समान
धोखा दूं न किसी को, हो देना उनको सम्मान ॥ 4 ॥

कृपा तुम्हारी बन जाती, आत्मा की खुराक है मेरे
जागे रात प्रभात प्रगट पदचिन्ह दृष्टिगत हो तेरे
इसीलिए सहसा करने लगता तेरा गुणगान ॥ 5 ॥

● ● ●

प्रभु अब कहां मिले समाधान
मैं हूं अदना बहुत बड़े तुम, सम्मुख सारा जहान ॥ स्था. ॥

तेरे रूप अनेकों में से मन में एक बसाऊं
भले, बन सकूं छोटा मोटा, दिल का देव बनाऊं
समय समय पर करूं अर्चना–पूजा कर गुणगान ॥ 1 ॥

भक्ति ही केवल नहीं तेरी, मेरा भी तो स्वार्थ
चालाकी कर नहीं छिपाऊं, जो भी बना यथार्थ
झूठ बोलकर नहीं दिखाना चाहूं जरा उफान ॥ 2 ॥

कैसे होने दे सकता हूं मुझसे तुमको दूर
माफ किया है और करोगे जो भी हुवे कुसूर
तेरा जाप बनेगा मेरे, सुन्दरतर वरदान ॥ 3' ॥

शक्ति नहीं किसी की तुमसे जाऊं दूर धकेला
मैं अब हूं भक्त तेरे बिन कैसे रहूं अकेला
सुधासिंधु ! तेरी बिन्दु का कर पाऊं जलपान ॥ 4 ॥

सब कुछ है मन्जूर साथ पर तेरा कभी न छूटे
जिसका बल पाया मुश्किल से, कभी जरा नहीं टूटे
सत्य मार्ग पा जाऊं बिखरे सारा ही व्यवधान ॥ 5 ॥

उस कल्पतरु, का ध्यान धरू
है जिसकी सघन छाया, विश्राम जहाँ अति पाया ॥ स्था ॥

गरमी मे झुलसा ज्यो तन लिए फिरता मारा मारा
तेरी छायामय ठडक ने उससे शीघ्र उबारा
कैसे भूल सकूगा मैं। रटते नही थकूगा मै
जीवन मे दे मोड इशारे ही से उसे संवारा
मुरझाया फिर मुस्काया। रुकता कदम बढाया ॥ 1 ॥

सरदी की ठिठुरन असह्य, था तेज हवा का झोका
ओट तने की लेकर बैठा, जिसने झोका रोका
प्रतिपल याद करूगा मे। तेरी शरण वरूगा मैं
सम्यग्दृष्टि से देखन का पाया भला झरोखा
क्रम जो एक बताया। मुझको बहुत सुहाया ॥ 2 ॥

जगल मे था फसा हुआ, लगता था कुछ चु धियाया
ठीक समय पर तुमने आकर, सीधा मार्ग दिखाया
वह साथ वन गया सहारा। भटकन मे हुआ छुटकारा
नए मार्ग पे चढा दिया, राही उसका वनवाया
महर का जोश दिलाया, साहस से भी मिलवाया ॥ 3 ॥

वहुत अडचनो वाधाओ को पार किया जीवन मे
इसीलिए मैं शरण मागता तेरे श्रीचरणन मे
वनू महाभाग्यशाली। होकर स्वयम् दीवाली
तभी तो हुआ प्राप्त लाभ इन भले दिनो के मिलन मे
अग–प्रत्यग नमाया। गुणगीत खुशमना गाया ॥ 4 ॥

मेरे जीवन में नई मोड़ देने वाली तकदीर !
मुझे न लगे सुनाई देने तेरी कर्णप्रिय तकरीर
मैं दास तेरा । विश्वास मेरा
जो मारग तुमने दिखलाया, उसका मैं राहगीर ॥ स्था. ॥

याद तुम्हारी नूतन ताजापन लेकर आती है
रोमों की सारी सुराख गीत तेरे गाती है
नैनों के दीपक चमकीले । बन जाते हैं अति फुर्तीले
बारबार तो तव दर्शन हित हो जाते है अधीर ॥ 1 ॥

स्मृतिपटल पर खुशी भरे पूर्व दिवस आते हैं
साज बिना भी सुन्दर ताल, लय मे ज्यो गाते हैं
लगे नाचने मन की मीरा । बढे तीव्रता बिन पिए नीर
मानो सहलाने वाली चलती रहती है समीर ॥ 2 ॥

उत्सवमय प्रतिदिन यह तेरा दिया महान अहसान
मैं इन शब्दों के ही द्वारा करता हूं सम्मान
मैं क्या जानू गुणो को गाना तेरे बलपर हू मस्ताना
दिल मेरे मे बसी हुई तेरी सुन्दर तस्वीर ॥ 3 ॥

मुझे नहीं भूलोगे स्वामी ! चरणो मे फरियाद
मेरी सवारें अब तरदो मुझको केवल बेखाद
मैं प्राणी हूं भोला भाला जपता केवल तेरी माला
मुझे सफल होके जीवन मे, करू यही तदबीर ॥ 4 ॥

'तुमको ध्याना सब कुछ पाना', माना यह सिद्धात
इसी सत्य को जान लिया जो आवश्यक था नितान
शान मेरे मे सदा बसो हो, तार जो होले शीघ्र कसो तो
मेरे दिलदार, पद नत तालाक दिल का वजीर ॥ 5 ॥

शिखर की चढाई, चरणतल है आई
यह तेरी कृपा महान् । यह तेरा ही वरदान ॥ स्था ॥
वहुत ही बढा हू । बहुत ही चढा हू । पुस्तक बे लिखी को
सहज ही पढा हू । मुझे ऐसी पढाई है तुमने पढाई ॥1॥
काटो पे चला हू । तम से निकाला हूँ । मैं फिर भी भला हू
कोई कहदे बला हू । कला तुमने सिखाई, वह मेरे काम आई॥2॥
स्वीकृति हू तुम्हारी, स्मृति भी तुम्हारी । सुधृति भी तुम्हारी
मे कृति भी तुम्हारी । जो तुमसे है पाई, चरण मे चढाई ॥3॥
मार्ग तुमने दिखाया । पग जिस पे बढाया । उसी पर हू चलता
है वही तो सुहाया । दी खुशी शहनाई, मैंने उसको बजाई ॥4॥
कर दिया उपकार । मानू तेरा आभार । मै था अति छोटा
डाला सुधार सस्कार । महर रखना सवाई, दृष्टि तुमपे टिकाई॥5

● ● ●

जो भी शक्ति पाऊगा वह तेरे नाम की होगी
तुमसे पाऊगा खुराक वह मेरे काम की होगी ॥
मैं याचक स्वारथिया तुम अमृत–घन जैसे दानी
सौभागी वन जाऊ इसलिए बरसो अमृत–पानी
सवसे वढकर वही घडी मुझे दिए ईनाम की होगी ॥1॥
जाप तेरा पुष्टिकर भोजन, अनुपम जिसका स्वाद
मिट जाता खाते ही सारा भवो भवो का विपाद
उसके आगे ना कुछ सम, वरफी वादाम की होगी ॥2॥
भटका पा गया राजपंथ, इतउत तरु छायादार
फूल फलो से सज्जित जैसे आई हुई वहार
चलने वढने वाली घडिया भी विश्राम की होगी ॥3॥

मेरे इस जीवन से सरगम। निकालो तो जानूं अनुपम
भरोसे तेरे गाता हू। चरण में शीश नमाता हूँ ॥ स्था. ॥

ताल तुम्हारी पर नाचूं मैं झूमझूम के
ज्वार आ रहा दिलसागर मे घूमघूम के
हिलोरे खुशिया खाती। राग लय नई सुनाती
मन–महफिल सजाता हू ॥ 1 ॥

तेरे बताए पथपर बढता बडे जोश से
तेरे बताए पर्वत चढता बडे होश से
मंजिले पार हूँ करता, रोग, भय मुझसे डरता
सुफल इच्छित पाता हू ॥ 2 ॥

क्षुधा, प्यास बिसरू केवल जप तेरे जाप से
टल जाता ऐसे कर आता महापाप से
साख सम्मान दिलाती। रहे ज्यो गोती नाती
सही यह हाल बताता हू ॥ 3 ॥

मेरे काम की बात भले कोई कहे अन्यथा
मेरा खुशी प्रभात किसी को होगी क्यो व्यथा
कृतघ्न क्यो बन जाऊ। किया गुण क्यो विसराऊ
आत्म-साक्षात् यो पाता हू ॥ 4 ॥

पूर्ण तेरा सहयोग है फलता ज्यो वरदान
माटी के ढेले को वना दिया इन्सान
यही उपकार तुम्हारा, इसी का वडा सहारा
लो श्रद्धा चढाना हू ॥ 5 ॥

जव भी अटकी पार करादी तुमने गाडी
यात्रा चालू रही अगाडी और अगाडी
शुभ सपने ऐसे मैंने कई वार हैं हेरे ॥ 4 ॥

कृपा तुम्हारी बनी रही तो तर जाऊगा
गीत खुशी के पचम स्वर मे मैं गाऊगा
सुघर जाएगे काम एकसाथ वहुतेरे ॥ 5 ॥

● ● ●

याद जव तुम आते हो, भूख नीद सव जाता भूल
लगता जैसे हो वतसाते, शुभ चिन्तन का हो वही मूल ॥ स्था ॥

एक वार नही अनेक वार हुआ है ऐसा
तव क्यो मैं आश्चर्य करू कैसा यह कैसा ?
छूट जाय इसीसे सम्मुख आता चिन्तन ऊल जलूल ॥ 1 ॥

पाना वह पालेता हू ऐसे कर सारा
उलझी डोर का सहज मिले जैसे हर किनारा
चुभती शूले भी यो हो मेरे लिए कोमल फूल ॥ 2 ॥

पावन होने हित करता मैं तुमको याद
ऐसे मेरे मे भर जाता नव आल्हाद
हर प्रतिकूल भी परिस्थिति हो मेरे अनुकूल ॥ 3 ॥

नव चिन्तन मिलने से रहे न समय का ध्यान
सचमुच कभी कभी तो पाता अपूर्व ज्ञान
अवर्णनीय खुशी पाता ज्यो पा मनमोहक फूल ॥ 4 ॥

वनो सहायक जव भी हो आवश्यकता
देते मुझे वडी सरलता से जो सफलता
कहने से भी वहुत वच गया, मानू जाप तेरा स्कूल ॥ 4 ॥

राह दिखाई छूटे ना। मन मस्ताई टूटे ना

दौलत जो तुमने दिलवाई, चोर, लुटेरा लूटे ना ॥ स्थो. ॥

दिया बहुत है फिर भी देते, उसको कैसे भूलूं
चाहूं तेरे भरोसे नभ को छलांग बिन ही छूलूं
कृपादृष्टि की अमर झड़ी तुमने बरसाई छूटे ना ॥ 1 ॥

चलता हूं मैं तेरे भरोसे, चढ़ता ऊंचे पर्वत
विष भी तो मेरे खातिर होता गुणकारी शर्बत
वर्षा में भी मेरे मन में खुशियां छाई छूटे ना ॥ 2 ॥

धारा तेज नदी की भी बन जाती मधुरी लहरें
सागर की हो शांत देख जैसे बहती हो नहरें
सदा जागते रहने की जो सीख सिखाई छूटे ना ॥ 3 ॥

तेरा यह उपकार मेरे हित बहुत काम का मानिक
शुद्ध बने मन सुधर जाय जीवन मेरा बिनती इक
निशान मिलता रहे परिष्कृत, शुद्ध कमाई लूटे ना ॥ 4 ॥

मेरी कला बनूं सुन्दर, चमत्कार सच होगा
कर्म साधना सरल बने व पूर्णोद्धार सच होगा
ज्योति में ज्योति मिलने तक तेरी प्रभुताई छूटे ना ॥ 5 ॥

जहां तक साथ निभाया है तो आगे और निभाना

और अरज मगर करेंगे, राखो पूर्ण ध्यान ॥ स्था. ॥

तेरा यह उपकार, नहीं है भूला जाने काबिल
तेरा यह एहसान मेरे खातिर है पूरा कामिल
इसीलिए तो शुक्र रहूंगा नित, प्रकार जिनके नाना ॥ 1 ॥

शुभ दिन जो भी पाता हूं वह तेरा ही परताप
शुभ दृष्टि तेरी से सारे, टल जाते अभिशाप
पडाव एक-एक से बढकर, मिलता सदा सुहाना ॥ 2 ॥

नैन ऋणी हैं हृदय ऋणी है, तेरा जो उपकार
देता था दुत्कार वही करने लग गया सत्कार
दुख सकट टल जाते दूर से, लेकर कोई बहाना ॥ 3 ॥

मै तो केवल याद से पा लेता जो चाहूं सारा
करो मुझे स्वीकार भक्त इक, भोलाभाला प्यारा
तुम महान हो मैं अदना, जानू केवल गुणगाना ॥ 4 ॥

लाखो लाख नमस्कार तेरे चरणो मे करता
समय समय पर याद तेरी कर तन्मयता से सुमरता
यही सफल बन जाए मेरा चरम लक्ष्य को पाना ॥ 5 ॥

हाथ तेरे का छत्र मेरे सर। जब तक है लेगा क्या कोइ कर

इर्ष्या कर चाहे बिगाडना। उसको ही मिलती लताड़ना
पहले ना यदि, पीछे समझे। दुनिया का ऐसा ही चक्कर ॥

स्वाभिमान को नही छोडना। क्रोध, मान, लालच न जोड़ना।
कुसमय जल्दी पार निकलता, बुरा न करसके, मिलेन अवसर।

याद करे प्रभु को सब पावे। गुण नित उठजो उनके गावे
उनसे मिले सहारा पूरा। पार करादें वे भवसागर ॥

सरदी गरमी सब बचायगा। सहायतार्थ वर्षा मे पायगा
ऐसा ही कर-छत्र है गुणी। अपने सर पर ले जल्दी घर ॥

बुरा करेगा बुरा भरेगा। कर्म किसी से नही टरेगा
महापुरुषो को भी ना छोडा, तेरा तत्र उसकोहो क्यो डर ॥

कृपा तेरी के जल सीचे से हो, बाग सुरगा हरा भरा
भागे भय का भूत शीघ्र, कोई भी सके न मुझे डरा
गुदडिया अति सुन्दर सुघराई, न बनू कष्टो मे मैं अधीर ॥4॥
कैसे अतर दिखलाऊ शुभ दृष्टि तेरी सहचारी
भरे छलाछल झोली चिंतन की, चमके दातारी
नगरिया सर्वश्रेष्ट बतलाई, मै बन सकू शीघ्र अशरीर ॥5॥

❀ ❀ ❀

कैसे तुम्हे भुलाऊ मेरे स्वामी ! कैसे तुम्हे बिसराऊ ॥
तुमसे ही पाया है सब कुछ, फिर भी तुमसे पाऊ ॥ स्था ॥
जब जब भीड पडी तब तब तुमसे ही मिला सहारा
उलझ गया यदि समय तुरत तुमने आ उसे सवारा
सबल पाया जाप तेरे से, क्या उसको गिनवाऊ ॥1॥
रुक जाए कोई काम अगर तुम उसको हो बढवाते
बिगड जाय कोई वक्त अगर, तुम उसको हो बनवाते
बाकी मेरा पडा समझना, जग को क्या समझाऊं ॥2॥
कहा जा सके रहस्य उसको बतलादू मै कैसे
प्रथम आहार पे जीवन टिकता, तेरा जाप है वैसे
गाता आया हू गुण तेरे, आजीवन ही गाऊ ॥3॥
तुम बिन कौन सहायक बनता मुझ मूरख का, त्राता !
आज सभी साथी बनने हित जोडन चाहे नाता
चाहे जग जैसा भी जाने, दास तेरा कहलाऊ ॥4॥
जरा नही अत्युक्ति इसमे, दिल के भाव हैं आशा !
बिन पूछे ही कर देता मै इसका जरा खुलासा
पूरो अतिम माग ज्योति–आनन्द मे शीघ्र समाऊ ॥5॥

कृति ऐसी जिनकी हों उसका कैसा रचनाकार
जान अचम्भित हो जाएगा फिर सारा ससार
काम तेरा सबके दिल मे गहरा घर कर जाए ॥ 3 ॥
और कौन दुख मे साथी हो, बिना तेरे भगवान
अधिक और न चाहूँ कुछ भी, दो तो बना इसान
सद्‌गुण मेरे अन्तर उर मे स्वत. उभर आए ॥ 4 ॥
करू प्रार्थना पुन पुनः, देते रहना सहयोग
वह बन जाए मेरे शुभ व सुन्दरतर सहयोग
करते जाप भजन प्रतिदिन अति शीघ्र गुजर जाए ॥ 5 ॥

❂ □ ●

तुम्हारी करुणा महान् सहायक । बन सका नालायक से लायक ॥
जगली प्राणी सदृश ही था, कब होती व्यवस्था
विवेक जागृत हुआ तनिक सा, स्वस्थ हुई अवस्था
गाना तनिक न आता फिर भी हूं तेरा गुणगायक ॥ 1 ॥
कृपा रही व रहेगी तेरी, ऐसा दृढ अनुमान
मेरे अन्तरदिल मे रहना, बन स्थाई मेहमान
काम पडे बनते सहयोगी, इसलिए हो अधिष्ठायक ॥ 2 ॥
आशा व विश्वास लिए हू, दोगे अवश्य सहारा
भवसागर का बीच पारकर, पाऊ अवश्य किनारा
स्मृति तेरी ही बन ज एगी मेरे शुभ फलदायक ॥ 3 ॥
अकथनीय कृपा मेरे पर, खुद ही साथ जुडे हो
समदृष्टि शुभ दृष्टि देने रहते सदा खडे हो
अधिक मिले त्यो बढे चाह मेरे जीवन उन्नायक ॥ 4 ॥
फिर तो निश्चय ही कल्याण मेरा होगा बिन अडचन
मजिल पर मजिल मैं करने उडता चलू दनादन
दास तेरा मैं प्रभु तुम मेरे, का यह ही परिचायक ॥ 5 ॥

तेरे पर आशा लिए मे बेधड़के चलता हू
खाता पीता खुश होता खिलता व फलता हू
जव तव याद करू ज्यादा फिर सुमर पाऊगा ।।4।।
आशा को विश्वास मिला, हो वाधा अडचन दूर
कर्मो की विशाल गिरि–शृ खला होवे चूर चूर
योकर पूरा का पूरा मैं सुघर जाऊ गा ।।5।।

❀ ❀ ❀

वर तेरा जव साथ क्या करे वाधा की छुटपुट बातें
ज्योति जब मेरी अपनी तो, कैसी अधिकारी रातें ।। स्था ।।

दाता देखे वहुत मगर तेरे जैसा न मिला देवा
तरा आशीर्वाद दे रहा मुझको खुराक भर मेवा
मरु पाता मानो मु ह मांगी, मौसम बिन भी वरसातें ।।1।।
ऐसे स्वामी का सेवकपन विरले को ही मिल पाता
मधुर मेघ मल्हार गोद मे, मोर मेघ प्रति ज्यो गाता
हृततत्री के तार हर्ष मे त्यो तैरते उतराते ।।2।।
उऋण सदैव नही चाहूँ होना उपकार तुम्हारे से
गा गुणगान गगन गु जाऊ आजोवन जयनारे से
श्रेय तुम्हे ही है सारा जो, सफल हुई शुभ शुरु आते ।।3।।
इक साधारण मुझ प्राणी को वना दिया कुछ कुछ लायक
तेरा वरद हाथ सहयोगी इसीलिए शुभ फलदायक
पार मजिले करू घडाधड़, चले साथ ज्यो वीतयाते ।।4।।
वनी रही शुभदृष्टि अगर तो शीघ्र वनू मैं भी अम्लान
नाव पार भवसागर से होने को ही विन दिए थकान
स्मृति पट पर जव भी आते, लगते हो सम्मुख मुस्काते ।।5।।

द्वापर प्रति तेरा वरदान ।
इस मारग पर बढ़ता प्राणी सम्मुख सुख की खान ॥

हट जाती सारी ही उदासी । दीखन लगती नई प्रभासी
मूर्ति तेरी शुभफलदायक है, भर देती नव जान ॥ 1 ॥

संकट सारा टल जाता है । छिपा आनन्द निकल आता है
नि री तेजी प्रगति मिश्रित, जननी बने मुस्कान ॥ 2 ॥

स्वार्थवश हू तुमको ध्याता । मन मंदिर को तुमसे सजाता
करण चिन्तन मे सुन्दर हो जब करता गुणगान ॥ 3 ॥

तुम दाता मैं याचक तेरा । जीवन सुधार करदो मेरा
री याचना केवल तुमसे । हो मुझ पर दयावान ॥ 4 ॥

सौभाग्य बना तेरा उपकार । मांगू कम मिलता अनपार
पाया बहुत कल्पनातीत । यह ही तो उत्थान ॥ 5 ॥

❖

याद तेरी हो सुख दर्शन
द पता सुख हो जाता जब याद तुम्हें मेरा अन्तरमन ॥

म छूटे सो अनेक छूटे, पर तुमको सब कुछ पाया
तु वसंत ने समय से पहले आकर कानन सरसाया
मेरो दिल के कोने मे हो गया आत्मानंद का स्पर्शन ॥ 1 ॥

जो प्राणी भटकोगे तुम राह लगाते हो रहना
[illegible] यदि ना मानू तो पान पकड़कर भी कहना
[illegible] के कर साथ साथ रूठ रा गहना सा मन्थन ॥ 2 ॥

[illegible] याद तेरी द्वारा चिन्तन
[illegible] उठे पर पर्दों नदृश मेरा नर–जीवन
[illegible] उतर प्रार धरती पर नर हो जा नन्दन-कानन ॥ 3 ॥

तेरा आशीर्वाद सही पथ, मुझको दिखलाने वाला
तेरी शिक्षा मेरे खातिर बनजा अमृत का प्याला
हर क्षण सफल मानता जिसमें कर पाता तेरा सुमिरन ॥ 4 ॥

जीवन सुधर जायगा मेरा, यह विश्वास मिला साक्षात्
रात बीत जायगी धुंधली, प्रगटेगा उजला परभात
इसी एक इच्छा को पूरो, करू याचना ऐ भगवान ॥ 5 ॥

शमा बनी है याद तेरी, साधना-लीन हम परवाने
महफिल सदृश सारा जीवन, मस्ती लेते ज्यो मस्ताने ॥ स्था ॥

उद्गम-स्थल उसका जाप तेरा, तन्मय हो गए जपने वाले
भक्ति वत्सलता का मिलाप, होते ही बनें अपने वाले
अशात व्यथा हो गई शांत, दृष्टि दे लगते सहलाने ॥ 1 ॥

आशा की कडिया जुडी हुई, विश्वास इस तरह मित्र बना
वरदान भी देना निभवाना, यही श्रेष्ठ तेरा दातारपना
गाना कृतज्ञता का बनता, यादो मे लगू गुनगुनाने ॥ 2 ॥

आवश्यकता सहयोग की है, मिल जाएगी मंजिल साथिन
यह तेरे द्वारा हो सकता, गिनतो हारी मेरी गिन गिन
पाथेय-तृप्ती भूखे खातिर, है रखा गया ज्यो सिरहाने ॥ 3 ॥

कष्टों को हस हस सहन करू, व तोडू कर्मों की कारा
चिपका तम हटे सदा के लिए, मिलजाए अनुपम उजियारा
दुर्लभता ऐसे सुलभ बने, दे आमन्त्रण सद्गति आने ॥ 4 ॥

जब चाकर हूँ उन चरणो का, सबल मानू अपने दिल मे
दिनरात चलू बिन थके रुके, मिल पाऊ अंतिम मजिल मे
वही परमधाम वही ज्ञान ज्योति मे विलीनता होना माने ॥ 5 ॥

है यहाँ तुम्हारी याद । हो तुम जिसकी बुनियाद
इसी सिलसिले से हो सकता राज नया ईजाद ॥ स्था ॥

तुम देते हो वर–कर से व मैं लेता हूं सर पर
भक्ति मे बदलू देता हूं चरणो मे अर्पित कर

यो ही क्रम यह चले निरतर । आशीर्वाद और फरियाद ॥1॥
तेरे बल पर पर्वत से भी, पड़े न मुझको डरना
करता रहता नही जान जो कुछ भी मुझको करना

चाहे कोई कहे कैसा पर मेरा दिल रहता आबाद ॥2॥
मुझको पता न कुछ रहता मैं कर गुजरता क्या क्या
सभी दिया तेरा जानूं मैं बरता, हरता क्या क्या

पड़े विवाद भले कोई पर मानूं उसे मैं शुभ सवाद ॥3॥
श्रेष्ठ सुफलदा क्षण होता जिसमे तेरा जप व सुमिरन
शुभ हो तीनो योग, बने विशुद्ध मेरे त्रिकरण

आशीर्वाद मेरा तुमको व साधुवाद, धन्यवाद ॥4॥
तेरी बराबरी करे, नही बस की बात किसी के
तुलना अनुचित हो जाती, स्वर्णशिर बने मनी के

अमर रहे जयनाद तेरा मेरे खातिर जायदाद ॥5॥

• • •

कराता है बढ़ने के खातिर । उड़ाता है चढ़ने के खातिर ।
[illegible] ॥ स्था ॥
[illegible]
[illegible]
मनोविज्ञान यह [illegible] खातिर ॥1॥

शक्ति भर देते मेरे मे, तेरा यह अहसान
आशीर्वाद दिया तेरा बन गया मेरे वरदान
सजाऊ तुमसे मन मन्दिर ॥2॥

लिखने का है रहस्य धीरे धीरे मे गाता हूँ
तत्त्व बन गए नए स्वरो के, सहज उन्हे पाता हू
लक्ष्य है एक प्रतीक्षित चिर ॥3॥

ठीक समय पर तुमने जगाकर, ली मेरी सभाल
तभी तीव्रता से बढ पाया, हू प्रभु दीन दयाल
तेरी भक्ति मे मैं हाजिर ॥4॥

अधिक महर की और चाह है, यदि उसको पाजाऊ
पशुता हट मानवता आए, जीवन को चमकाऊ
समदृष्टि रहने पाए स्थिर ॥5॥

मार्ग का दर्शन दो भगवान ! हटजा आवरण अज्ञान ॥
क्षीर नीर को अलग अलग कर देना हो आसान ॥ स्था ॥
नया पुराना मेल न खाता । इसीलिए कहा समझने पाता
पहचानू रहस्य दृष्टि दो, टूटी जुडजा तान ॥1॥
अदने की छोटी बुद्धि है । जानू ना क्या म्लान शुद्धि है
विवेक जागृत हो जाए यदि, होऊ सद्‌गुणवान ॥2॥
जजालो की लगी कतारे । तेज वहाव से फटे किनारे
मार्ग स्वच्छ दीखेगा ज्यो त्यो हटजा जब तोफान ॥3॥
तजदू यदि अज्ञान डगर को, प्राप्त करू सद्‌ज्ञान नगर को
हो सार्थकता जीवन की यह, बन जाए सगान ॥4॥
समदृष्टि सौभाग्य से पाऊ । जीवन अपने को चमकाऊ
भटकना मिट जाय सदा का, कहलाऊ अम्लान ॥5॥

जीवन पर्यंत न भूलूं अहसान । सुबुद्धि दाता बने मेरे भगवान

नहीं कल्पना की थी जितनी, उतना बढ पाया हूं
आशा से भी अधिक चला, मस्ती से मस्ताया हूं
वृद्धापन में हुवा जवान, बढ रहा बन जाने इन्सान ॥1॥

महाखुशी सह बहुत मंजिलें, मैंने पार करी है
अगली फिर नजदीक आ रही, दूरी अधिक डरी है
अनुभव बना जो था अनुमान । पता न कैसे हुआ आसान ॥2॥

मैं जीवन जी रहा खुशी से, दुख का जरा न काम
आत्मा सहयोगी बन रहता दक्षिण एवम् वाम
सारे दे देते सम्मान । इसीलिए करता गुणगान ॥3॥

तुमने जो दे दिया मुझे, वह सभी तरह से पूरा
कठिन काम कोई भी आवे, क्यों उससे रहूं दूरा
मेरे दिल पर तेरे निशान बनना चाह रहा अम्लान ॥4॥

ईर्ष्यालु जन लगे हुए मेरे पीछे दिन रात
भला आदमी कहलाने तो रहना चाहिए शांत
क्योंकि मेरे घट के मेहमान । सहायक मुझ पर महामहान ॥5॥

● ● ●

बिन सौभाग्य के कैसे तुमको पा जाता । सौभाग्य ही संयोग मिलाता ॥
तुम थे जहाँ, वहाँ पर मैं था । तुम थे जहा वहाँ पर मैं था
मिलन हुवा मणि कांचनता । वही बना शुभ और सुफलता
कैसे उसे अपने दिमाग से निकलवाता ॥1॥

बहुत बड़ी ही मस्ती पाई । तन में था ज्योति दिखलाई
नहि समझने की बनी रह सके । नहि लिखने की बनी रह सके
सबका कृपा सदा सर्वदा दिखलाता ॥2॥

मेरे लिए बन गया अहसान । वही जो तुमने दिया वरदान
मौके मौके साथ रहेगा । सर पर तेरा हाथ रहेगा
सहजतया गुणगान तेरा मैं गाता ॥3॥
शुभ अवसर ही शुभ सयोग । हटते बाधा अडचत रोग
गति ही प्रगति बन जाती । मजिल तक भी पहुँचाती
कारण यही तो बनता जो मुस्काता ॥4॥
तेरा सहारा ही वढवाता । भरोसा ऊचा चढवाता
यही बात समझनी मुश्किल । रह रहकर उत्साहित हो दिल
आत्मा से आत्मा को जल्दी मिलवाता ॥5॥

❦ ❦ ❦

भेंट तुम्हे यह दान तेरा । छोटा सा दिया सम्मान तेरा ॥
नित पाता हूं नित खाता हू । आनन्दमय गाने गाता हू
तन्मयता जब जुड़ जाती है । तेरे मे यो खोजाता हू
वढू मील चले का पा निशान तेरा ॥1॥
शीघ्र दिवस जाता है बीत । निशि भी होती शीघ्र व्यतीत
सदुपयोग समय का सुन्दर/बना गुनगुनाना सगीत
तुम उदधि, बूद इक ज्ञान मेरा ॥2॥
साधारण सा हू मैं सेवक । छोटे बच्चो की सी बकझक
तेरा प्यार दुलार बढाता रहे सिखाता नया सबक
मानता मुझ पर अहसान तेरा ॥3॥
मेरे जीवन को मोड दिया । अपने चरणो सह जोड लिया
जीवन सुधार कुछ हुआ मेरा । पथ बुरा लगा उसे छोड दिया
वढता करते गुणगान तेरा ॥4॥
शुभ दृष्टि तेरी बनी रहे । वढती सद्गुण आमदनी रहे
आनन्द भरा जीवन जीऊ । सुरता न मेरी अनमनी रहे
लिया मान इसे फरमान तेरा ॥5॥

जीवन की बगिया हरी भरी । ज्यों फूल बनन कलियां उभरी
तुम जैसा पाया स्वामी । ना कमी रहे ना खामी ॥ स्था ॥

मेरा सुधार हो गया स्वत । अच्छा विचार हो गया स्वतः
पतझड़ का पलायन सदा लिए, जीवन बहार हो गया स्वत.
ज्योति आगे आगे चलती, मे उसका हो गया अनुगामी ॥1॥

मंगल मार्ग सम्मुख आया । मंजिल से उसको मिलवाया
पैरो मे दे दी चंचलता, गति मे तेजी को भी पाया
श्रेष्ठ चाह यह मिली मुझे, बनना अवश्य सत्पथगामी ॥2॥

आकांक्षा में लक्ष्य चरम । वह ही कहलाता स्थान परम
मिट जाए सारी ही भटकन । मंजिल असली जगाधीन मरम
सागर मे ज्यों नदिया मिलती । मिलकर बन जाती विश्रामी ॥3॥

नव जीवन ऊषा उठ आए । कानन के कुसुमवत् खिल जाए
ऐसी बहार का इच्छुक हूं । आने पर वापिस ना जाए
फिर चमत्कार उसको मानूं । मेरे ओ तुम अन्तर्यामी ॥4॥

मिल जाए तुम्हारी अगर मदद । निर्गुण की पार करूं सरहद
ना रोक सकेगी कोई रोक । खुशियां हो जाएगी अनहद
है सुधार यही उद्धार यही, बस इतना ही जीवन ज्ञानी ॥5॥

● ● ●

प्रभु [illegible], मार्ग बतादो । [illegible]
[illegible] तेरे पर [illegible] । [illegible] ॥ ध्रुव ॥

हाथ पकड़ कर राह पे लाना, भटक रहा था जंगल मे
अन्धे के पतवार नाव की जैसे बैठे ज्यों [illegible] मे
तुमसे [illegible] मुझे इन्सान । मानूं सभी को तुम्हें भगवान ॥1॥

लिए एक के कष्ट उठाए, उपकारी हो ऐसा कौन
सारी आफत अपने बल से करदी मानो पूरी मौन
मेरे लिए तो कृपा निधान। गाता हू तेरे गुणगान ॥2॥

गति ने सुन्दर प्रगति पाई, बढ पाया इतना आगे
सोए थे सौभाग्य अग सब, आलस तजकर वे जागे
बढता चलू न पाऊ थकान। लक्ष्य का मिलना हो आसान ॥3॥

जीभ एक है गुण अनेक है, कैसे सग गाऊ सारे
फिर भी इच्छा की सम्पूर्ति हित मिले आत्मिक इशारे
गा बन जाऊगा गुणवान। हो पाऊगा यो अम्लान ॥4॥

बहुत बहुत पाया है तुमसे, फिर भी तो उतनी ही प्यास
जाओ पिलाते, पीता जाऊ, क्रम चलता रहे ऐसा खास,
भरदो मुझ मे मधु मुस्कान। जरा न छू पाए अभिमान ॥5॥

चाबी दे दो इक आला। रहस्य का खोलू ताला
विद्या बुद्धि चिन्तन पाऊ बन जाऊं फिर मतवाला ॥ स्था ॥

मदिर का है द्वार बताया मनमोहक सि ार बजाया
स्वस्थ बनाया मस्त बताया, पाकर अमृत रस प्याला ॥1॥
प्रमाद का करते हो खात्मा। स्फूर्ति देते हो परमात्मा
बढता जाऊ मजिल पाऊ, मिले सदा सुख की शाला ॥2॥
अमर रहे तेरा वरदान, रहूं मानता नित अहसान
कृति मैं तेरी स्मृति भी तेरी, तू ही मेरा रखवाला ॥3॥
स्वामी सेवक का नाता। मेरा तो बढता जाता
तेरी तो तुम ही जानोगे, मैं फेरूं तेरी माला ॥4॥
शब्द कहा ऐसे पाऊं। उपमित कर-कर गुण गाऊं
भावो की ही भेंट मानलो, दिल मे जिनको है आला ॥5॥

तेरी शुभदृष्टि से सारा काम बने आसान
सही सलामत जल्दी पहुँचू परम लक्ष्य सुस्थान-
सारी अपने आप शात हो इर्ष्यालु की डाह ॥ 4 ॥

एक नया अध्याय जुडेगा मेरे इस जीवन मे
वर्तमान से भविष्य स्पर्धा करे उन्नयन मे
बनू समर्थ पाकर तेरी शुभदृष्टि—रुपी—निगाह ॥ 3 ॥

❀

याद जिन्हे करना हो उन्हें नित याद करो
सुमरो अपने सहायक को मत विसरो ॥ स्था. ॥

ऊची ऊची उडान भरनी, अजान पहचानो
स्मृति ताजगी दाता उसको सहर्ष सम्मानो
विना पराजित किए किसी को, विजय वरो ॥ 1 ॥

पूर्ण भरोसा होता जिनका, उन्हे भुलाए कैसे
प्राप्त हुआ होगा भी बहुतो, तृष्णा अपार जैसे
अभयावस्था मिले स्वत ही यदि न डरो ॥ 2 ॥

बुरा मार्ग दूर रह जाए मुझसे बिना हटाए
आफत का तोफान बद हो, वरसे विना घटाए
राजमार्ग पाया मन ! उस पर ही बिचरो ॥ 3 ॥

सबल जिनसे है पाया गया, उनका ही अहसान
वन जाना होता ऐसे ही सच्चा इक इन्सान
ऐसा श्रेष्ठ दे चिन्तन दिल मे जोश भरो ॥ 4 ॥

सही समय की बात कदापि इसको नही भूलो
थोडा मात्र प्राप्त कर उस से अधिक नहीं फूलो
स्थायित्व ऐसा ही पाकर भवसिंधु तरो ॥ 5 ॥

जीवन की अनमोल घटी वह, जिसमें आती तेरी याद
जगत मंगलमय होता, निर्जन बन ज्यों हो चुका आबाद ।।ध्रु।।

मानूं तेरा नित्य पूर्ण उपकार, क्योंकि मेरे लिए शुभफल के दातार
जीवन जिस पर बन पाया है तेरा दिया वही आल्हाद ।।1।।

मुझ पशु को नर बना दिया बिन देर। चाही मेरी रात दिवस ही खैर
बढ़ने में सहयोगी अपनेपन की यही सही बुनियाद ।।2।।

तुम तो हो ही सदा सर्वदा मेरे। इसीलिए हर्षित आश्रय में तेरे
संकट दूर मेरे हो पा जाऊं आत्मिक-सुख का आस्वाद ।।3।।

मंजिल शीघ्र प्राप्त हो दृढ़ विश्वास। एक अपूर्व नींव का शिलान्यास
करता जाऊं शिखरों ऊपर गुंजाता तेरा जयनाद ।।4।।

मनमंदिर में भरो भावनी सुवास। मिट जाए लगी भवों 2 की प्यास
'स्वप्न सत्य हुआ' सुनलूं तेरे द्वारा ऐसा शुभ संवाद ।।5।।

***

पद भी लाठी शरण तेरे, है तेरा उपदेश
विस्मृत न होना स्मृति पट से अरजी चरणों में पेश ।।
जीवन सफल किया अपना, अन्यों को सफल बनाया
मेरे दिल में सुवास पाने दिल तेरे में क्यों आया
कारण बना सुधार मेरे का, तर्क नहीं अवशेष ।।1।।
अन्य जनों के भी तो तुम बन सकते थे उपकारी
पर मेरी स्थिति कैसी रहती संशय उठता भारी
जग में राह दिखाने मुझको, आए बन राकेश ।।2।।
आशीष न नहीं भूल सकूंगा तेरे वे वरदान
समय समय पर दी शिक्षा जो भरने मुझमें ज्ञान
इस तरह से तो तुम ही तो मेरे सर्वेश ।।3।।

कैसे भूल सकू फिर तुमको अति ही तुम से पाया
नया नया चिन्तन दे नया प्रकाश जो दिखलाया
गूज रहा आज भी मेरे सुधार हित आदेश ॥4॥
करी कृपा तो पडे निभानी, दृढ बन गया विश्वास
मेरी जीभ नाम तेरे का अटल रहे सहवास
जागे सोए मे भी ऐसा मनाता आया विशेष ॥5॥

मस्तक को मधुवन करने । सब-मे नव चिन्तन भरने
आया एक हकीम । शक्तिपुञ्ज असीम ॥ स्था ॥

कूडे में ऊगे पौधे-को, निज बगिया मे लाए
उचित खाद दे सीच सीच जल मुरझे को विकसाए
अंकुर नए नए फूटे निकले नए-नए बूटे । सच्चा बन गया ड्रीम ॥
तोफानो मे गिरते पडते उड़ते को दी ताकत
बना रहा यो स्थान स्वयम् का, पर कुछ भी ना लागत
अडचन दूर दूर भागी/कैसे नहीं मैं सौभागी/सुन्दर अति स्कीम ॥2॥
कायर सायर के जैसा इक घड़ डाला है स्वामी
अदने की अर्चना है छोटी, मानो अन्तर्यामी
सागर सम्मुख एक बूद सम, अति रहते भी यतीम ॥3॥
कैसे भूला जाए ऐसा अनुपमित उपहार
मेरे लिए तो सभी तरह से बन गए तुम थे उदार
चाकर बनना भी अच्छा हो, उनका हू बना मैं मुनीम ॥4॥
खोज खबर मेरी ली है, लेते भी रहना मालिक
चरणो मे रखता हू छोटी, यही प्रार्थना तो इक
मेरे दिल मे जपने तुम्हे चले योजना जो काय—भीम ॥5॥

ना भूलू उपकार आपरो । ओही साक्षात्कार आपरो ॥

जीवन खोटी कर कर मुझने केई हरावण आया
उलझण री दे चकाचौंध म्हारी चढी गिरावण आया
कृपा आपरी म्हारे सर पर ज्यां काया सह छाया
म्हारे वणी सहायक बांरे खातर वणगी माया ।
आछो ओ चमत्कार आपरो ॥1॥

लारै लाग्या खोजी केई गळत्या म्हारी ढूंढे
आधा आप वण्या खुद पड़ग्या दरडे मांही ऊंडे
मारग मिलग्यो ज्योति मुझने दे दी थारे इशारे
भटकण वचगी नावा ने तट आछे पार उतारे
जमा दियो संस्कार आपरो ॥2॥

सदा रही करता रहज्यो थे म्हारे पर रखवाळी
दूरी टळजा आवण वाळी आधी पीळी काळी
दुर्लभ प्राप्ति ने चट पालूं, लागे जरा न देरी
कट जावे जल्दी मू जल्दी चौरासी री फेरी
जाप सुफल दातार आपरो ॥3॥

हक्का बक्का सा रह जावे म्हारा सै दुश्चिन्तक
थारी चमक थारे पर ही वण जावे है कंटक
दिन में वेगी सहायता करणे री थारे जचजा
झूठो छफड़ा नहीं टिके साची सारी हो सचजा
ओही भलो पुरस्कार आपरो ॥4॥

धणी चौनणी अब चोटे मैं बयाने पडेला फेर
जल्दी मू जल्दी पामू मंजिल लागे ना देर
सुन्दर आ है थारी हथोटी कर दीज्यो उद्धार
आशा होगी दीसे है भवसागर सूं पार
म्हैं पर दिल है उदार आपरो ॥5॥

डूगरी पर चढ हेलो मार्यो बटाऊ ! सावधान
खोड मे रूळते ने उबार्यो, पलट दियो ध्यान ॥ स्था ॥
म्हे भटकोकड रुंधो रुळणो, जन्म अनन्ता बीत्या
अण चीत्या हो जाणे पर भी मान लिया सै चीत्या
अचानक आयो इक सजोग । बूथ मे जान भरण रो जोग
हुवो वो ही तो है वरदान ॥1॥
म्हे आळसियो नीद है वैरण, सुध-सुध सारी खोई
रात अमावस काळी पीळी, दीखे बस्तु न कोई
अचानक चमका दीनी बिजळी, पगडडी जद मिलगी उजळी
राज मारग सू हुवो मिलाण ॥2॥
पाणी रो अति वेग वढे, आ रही, नदी बरसाती
पजा सू गोडा कमरा तक, चट डूबेला छाती
वेग सू दौड्यो दौड्यो वढजा, शिखर पर ऊचो ऊचो चढजा
डूवणो छूटे हुवे उत्थान ॥3॥
आंधी उठी जोर सू दीखे नही हाथ ने हाथ
मारग नही छोडणो साहस ने राखीजे साथ
साफ होजासी थोडी देर । वणी रै जासी थारी खैर
पहूंच जासी सुनिश्चित स्थान ॥4॥
कृपा प्रभु री साथे चाले, आगे-पाछे थारे
वाही मार्ग बतावे भटकणसू भी वाही उबारे
भरोसो राखेजो है पूरो । वीरो काम न रेवे अधूरो
सुफल भक्ति रो ले तू मान ॥5॥

याद रा स्वाम पधारो, सज जासी म्हारो मन मन्दिर
सेवक म्हे श्रीचरणारो, चमकण लागेला जगमग दिल अन्दर
थारो वो वरदान आज तक बढतो रयो सवायो
थोडी सी जबान री भक्ति दे म्हे वीने पायो
एक अजब सी बात बणी मन म्हारे मे म्हें सोचू
अगर चूकतो गमांवतो आयोडो बो शुभ अवसर ॥1॥
दुर्लभ सुलभ काम हुवो म्हारो, राजपथ पर चढग्यो
साहस पा थांसू जीवन–यात्रा पर आगे बढग्यो
मस्ताई रा पग आगे आगे ही घगतो चालू
पूरो है विश्वास जम्यो शुभ निजरा थारी म्हेंपर ॥2॥
याद करूं ओडी वेळा मे, करतो खुशी मे रहस्यू
जोश होश पाकर थारेस्यू समता रख सब सहस्यू
वो दिन वेगो नेडो आसी, फळसी म्हारी आशा
वण ऋजु भवसागर सू जासू बाधा उलंघ ने तर ॥3॥
सद्बुद्धि कुछ दे दो मुझने सोचण बोलण खातर
ठगण अनेकां उचके मुझ पर जाण ज्या भोळो टाबर
'आवे लेवण पड देवणी', मन री मन मे रहजा
दीज्यो मिटा हो जो भी म्हारी सगळी खोड कसर ॥4॥
वडो थारो उपगार कदेई नही भूलणे लायक
एक जनम मां ही के अनेक जन्म जन्मातर तक
अन्तरदिल री सहज वात आ, नही पळेथण कोई
म्हारा तो पुजनीक आप हो ज्या होवे परमेश्वर ॥5॥

ग्रहसान ग्रापरो म्हारे पर । वरदान ग्रापरो म्हारे सर
मिनखां री गिणती में ग्राऊं, पहला हो कोरो ज्यां डागर ॥

देणो ग्रधिको लेणो कमती, भक्ति छोटी वत्सलता ग्रति
ज्यां देवतरु चिंतामणि होवे, मांग्या पहला तृप्त देवो कर ॥1॥
म्हें तो साधारण हो प्राणी । स्थिति यूं होसी ग्रा ना जाणी
भरदी हुशियारी मूरख में, पशु हो वणग्यो ग्रब तो म्हे नर ॥2॥
कद ग्रांतो प्रश्नां रो उत्तर । गिणीजतो भोळो ज्यां टाबर
थारे वगस्योडी बुद्धि पा, जाणूं ला रहस्य ग्रात्मिक हर ॥3॥
सब देण ग्रापरी ही मानूं । ग्राछो माडो कुछ पहचाणूं
ग्रो बडो सहारो ही मिलग्यो, वढतो-चढतो जाऊं तर तर ॥4॥
इण खातर थांरो ग्राभारी । वणग्या म्हारा थे उपकारी
मलण सिरपी ग्रा वात नही, वदूं थाने ग्रो परमेश्वर ॥4॥

● ● ●

ना वर्दई जाणी, ज्यां फळसी वरदान ।
म्हें वण ग्रासू गाचो एक इन्सान ॥ स्थ ॥

सेवा वजा सक्यो न ग्रापरी, चूक गयो संजोग
'होमी ह्या' जाणतो करतो वेल्या रो सदुपयोग
सेवा ग्रधिक सूं सुफल घणेरो पाणो हो ग्रासान ॥1॥
थारे बळसूं साहस ग्रडग्यो, टाटण जाळ जजाळ
पोलण में डरतो म्हें नागी, ग्राज वण्यो वाचाळ
सागिए पजाण म्हारे मे यां भरदी नवजान ॥2॥
भार नरणां मे श्रद्धा रा पन्द-पुष्प रख दीना
मानी है हो वणग्या म्हारे दुर्लभ-गुणी नगीना
करजो रै गू ग्राले ग्रागे, मान थारो ग्रहसान ॥3॥

दया आपरी सू पाजासू चिर प्रतीक्षित मंजिल
ज्योति ज्योति संग मिल जासी जा आपस मे हिलमिल
देखण रो अवसर मिल जासी ज्योतिस्वरुप स्थान ॥4॥
भव भव मे रूळणो मिट जासी, टळसी सारो चक्कर
कर्मा रा बंधन कटसी ज्यांरो परिणाम भयंकर
मिल जासी अपार सुखां री सदा टिकाऊ खाण ॥5॥

● ● ●

म्हारे मन मन्दिर रा देव म्हारी बिनती सुणो
भोळो टाबर जाण निभाइज्यो माइतपणो ॥ स्था ॥
थारोइ परताप ओ भिन भिन गिणाऊ भलाइ लो गिण
खुशी खुशी सू गुजरे निशदिन, कोई कष्ट दिया बिन
दियो आपरो थोक आछो, बुरो म्हारो भाग ऊणो ॥1॥
बाधा मे भी आगे बढणो ही म्हारी नही औकात
साझ विना आ कठे पडी है पूरी मिलणी बात
एक गुणो होणो कठिन काम बण्यो अनेका गुणो ॥2॥
नालायक वण कदेय न भूलू थांरो कियो उपकार
जीभ कई पातो तौभी गुण गाता न थकतो लिगार
सरल हुयो आगे वढणो, ज्योति खुद आप बणो ॥3॥
वडी सुखद आ यात्रा म्हारी, केवण री नही बात
'प्रमाण कायरो प्रत्यक्ष ने है' दीख रही साक्षात्
जोभी दियो था साझ म्हारे तो बो वढग्यो घणो घणो ॥4॥
नरभव रो लाह्वो ले लेसू पा थारो सहयोग
कायर कमजोर म्हारे जिसे रे भी वण्यो शुभ संजोग
चेष्टा करू मानव वणण आधार ले आप तणो ॥5॥

सेवा करणे रो अवसर जीवन मे बिरला पावे
सद्गुण रा सय्यातर बण वे जीवन ने चमकावे
सदासुखी ज्या मुळकावे, सबसू बढ लाभ महान् ॥4॥
आळस करणो ही गमावणो, सीधी सी आ बात
पर्ण आगे घरसी वीरे खातर ही स्वर्ण प्रभात
आगे गया राजपथ पर बांरा ले खोज निशाण ॥5॥

❦

चाद ने लहर बुलावे ओ
मन ऊमायो उछळे ऊचो, सुध भुलावे ओ ॥ स्थ। ॥

धरती पर जळ तिणमे लहर, बसे नभ मे शशि दूर
आशा अमर सखी है साथे, होसी मिलण जरूर
इन्तजार रो मिसरी मेवो, निशदिन, खावे ओ ॥1॥
पा सदेशो किरणा द्वारा, चचळता न समाय
होणी अणहोणी मिलणे सू, चमकण लागी काय
मानो भोळी लहर ने दिन रो सपनो आवे ओ ॥2॥
आकर्षण शक्ति दोन्या री, है आपस रो ताण
एक दूसरे मे भर देवे, अणचीत्यो हो प्राण
दोन्या री इण स्थिति ने सारी दुनिया सरावे ओ ॥3॥
चाद लहर रो दिल ना जाणे तारा सग रीझायो
फिरे रात दिन वारे सागे, अब तक नही थकायो
लहर बापडी इन्तजार करे, सिणगार सजावे ओ ॥4॥
लहर आज तक समझे चाद नभ मे घूमे सह तारा
कुण दोन्या रे बीच मे पड करे बारा निपटारा
मै स्वारथ रा सीरी सारी दुनिया बतावे ओ ॥5॥

जीवन की अस्थिरता

जाने वाले को कहता मेरा ? । नही किसी का हुवा बने कैसे तेरा ।।स्था

'अमर नाम शुभ कार्य करे से', यदि ऐसा जाने
बुरा काम करने से डरना, 'मृत्यु उसे माने'
बड़े बड़े अनुभवियो ने कही बात निजी अनुभव से
हो जाएगा आखिर तो मरघट मे डेरा ।।1।।

पाच तत्व तो नश्वर हैं, मिल जाते और बिखरते
इनसे छुटकारा पाने से ही लघु-गुरु सब तरते
पाय रहे उनका जब तक तब तक होता भटकाव
चौरासी का पाहुन, चोरासी मे फेरा ।।2।।

विवेक से इसको जानो व करो जरा सा गौर
पहले जाना अन्य प्रकार पर दीख रहा अब और
सम्यग्ज्ञान-दृष्टि से सोचो, धोखा नही खावोगे
मिट जाए अज्ञान का गहरा पड़ा जो घेरा ।।3।।

आना जाना सब कहते पर कौन करे तैयारी
'मरने वाला और' कहे जब, अपनी होती पारी
'बड़ी अजब सी बात' टानना चाहे होनहार पर
साधारण जाने उसको ज्यो ऐरा गैरा ।।4।।

[illegible] मे जो नाम गौन को जीवन सी [illegible]
'[illegible] से होता यो आया', अटल सत्य इसे मानो
[illegible] से मिलना हो जैसे, बड़ी खुशी से [illegible]
[illegible] मानो प्रति दुर्लभ [illegible] सवेरा ।।5।।

दिन रात सीख देते, सबको यहां से जाना है
बाद एक के एक ज्यो होते गए रवाना है ॥ स्था ॥

यह ससार बड़ा पेचीदा, लगता है पर सादा-सीधा
पार न हरेक पाया इसका, पाया वह मस्ताना है ॥1॥
आने वाला जाता है चला । स्वागत विदा रही है बतला
हर्ष-शोक दुख-सुख भी वैसे ठीक ज्यो मयखाना है ॥2॥
ना खोएगा वह पाएगा । खोएगा वह पछताएगा
नही आज का, सदा सदा का, सही सिद्धान्त सुहाना है ॥3॥
आनन्द सारो के मन भाता, जग उसे पाने है ललचाता
अदर को अदर मे ढू ढले, मिले अपूर्व खजाना है ॥4॥
ढील करन मे रहना घाटा, पतग हो जाए व काटा
डोर सभाले कर मे रखता, वही तो मन मर्दाना है ॥5॥

● ● ●

जो खेले जीवन पर वह कुछ कर गुजरता है
कुर्बानी का जोश वही पावे अमरता है ॥ स्था ॥
दृष्टि डालो इतिहास पर, जानोगे ऐसे ही हुआ है
भार वहन कर सके शोभता, उसके ही कधो पे जुआ है
सहनशील ही प्रगति करता, डरना पामरता है ॥1॥
हो भौंचक्का समरागण मे, छल व कपट का अनुगामी
वलिदानी ही विजय मुकुट का हो सकता सच्चा स्वामी
पद चूमे उसके मजिल शुभ नाम पसरता है ॥2॥
जीवन की गाडी मृत्यु तक धीरे से पहुँचाएगी
जीत हार दो द्वार सामने, वध पडे खुलवा देगी
मिले प्रमाण पत्र वीरता अथवा कयरता है ॥3॥

मिलन बिछुडने का सदेश लिए है आता
रोना पड़ता क्योकि खुशी मे था जो गाता ॥ स्था ॥

नियति का वरदान न कोई इससे वचित
जोभी जन्मे, मृत्यु उसकी होती निश्चित
इस नियम मे नही हुवा परिवर्तन किंचित
वर्तमान, भावी–अतीत मे सहज समाता ॥1॥

रहता है सयोग वही पर वियोग रहता
मन्सूबो का बनता महल, कभी वह ढहता
आगे–पीछे आया दुख–सुख जग है सहता
खेल–रचयिता–कर्म, असल मे वही विधाता ॥2॥

स्वागत जिसका होता उसको मिले विदाई
एक नदी के दोनो तटबधो की नाई
आने के सग जाने का पैगाम है भाई !
'सबसे अच्छा' अगर रख सके समपन नाता ॥3॥

चले जन्मने के सग मे ही मौत दौड़ती
किसकी मजाल उसके बढते चरण मोडती
चाहे कुछ भी करो नियम न अपने छोडती
खुशी खुशी करे आलिगन वह जीत भी जाता ॥4॥

'मरना तो निश्चय ही' इसको क्यो हो भूले
फिर क्यो माने बैठे हो उसे चुभती शूलें
समता का अधिकारी ही आनन्द में झूले
चलकर साथ चरम लक्ष्य तक भी पहुँचाता ॥5॥

विस्मृत हो जाए निश्चित । इस पर होंगे सब विस्मित
पर सुना तो है ऐसे । झुठलाया जाए कैसे ?

पल पल बीता जाता है यह मानव का जीवन
श्रम द्वारा अर्जित अनुभव ने पाया है चिन्तन
त्रुटियों पर पड़े दण्ड भुगतना, कैसे जाए विसरा
नहीं आज तक आया इसमें अन्तर कभी कथंचित ॥1॥

मौत अवश्यम्भावी है इस बात को कभी न भूलो
मजबूरी से भी ऐसा हो, खुशी से क्यों न कबूलो
पाया गया न कोई आज तक इसका अचूक निशान
कोई होनी कहे कोई अनहोनी कह हो आश्चर्यान्वित ॥2॥

अनेक जीवन प्राप्त किए हैं इस जीवन के आगे
लिप्त रहा किन कामों में व कौन कौनसे त्यागे
इन पर गौर करोगे यदि तो रहस्य पा जावोगे
जिसे प्राप्तकर नए प्रकार से, हो जावोगे पुलकित ॥3॥

जन्मने के साथ मृत्यु का मिलता है परवाना
कोई अमर न बना आज तक, दाने से भी दाना
आवश्यक कार्यों को पूरा जल्दी से कर लोगे
इस मरन का समय है निश्चित पहले से ही अंकित ॥4॥

नहीं याद रख पाएगा इसे तो धोखा खा जाएगा
याद रहा तो जीवन का संगीत हो खुश गाएगा
'[illegible] सत्य' इसी का सबको रखना होता ध्यान
विवेक व सद्ज्ञान यही, शुभयोगों से हो संचित ॥5॥

छोडे जा रही वुलवुल चमन को । तोडे जा रही अपनेपन को ।। स्था ।।
बहुत दिनो का साथ था सुन्दर । छोड दिया मिटो के अन्दर
कैसे तुम बिन साज सजेगा । मरुघर बना रही मधुवन को ।।1।।
जाना कैसा बहुत जरूरी ? तरसनहार की सुन मजबूरी
ध्यान जरा दो इस हालत पर । माटी बना रहो जीवन को ।।2।।
साथ नही था छूटने वाला । आज वही है छूटने वाला
भूला–भूला सा था अब तक । माना 'सदा रहे सावन' को ।।3।।
मिलना बिछुडन आज हो रहा । घाटा यह लग रहा है महा
पता नही फिर जाना हो कहा ? सूना करती इस कानन को ।।4।।
चमन निहोरा करता बुलबुल मतजा री ! गा गीत जी खुल
ध्यान तरस पर तनिक लगातो । कष्ट जरा दो चितन मनन को ।।5।।

नया सवेरा नया काम, साझ को फिर लेगे विश्राम
जीवन योही चले निरन्तर, पोथा बन जाए वृहत्तर
लेखक अनेक लिखते लिखते, पहुंच जाय परधाम ।।

कभी जन्म गधे का पाया । पीठ पर गठ्ठर था धरवाया
भार ढो जीवन भर वदले मे डडा वेकसूर भी खाया
केवल फटकार मिली है, खाना–सोना किया हराम ।।1।।
वन गया कभी था श्वान । घूमता फिरता रहा वेथकान
किया पहरा चौकस दिन रात, नही पाया फिर भी सम्मान
खा खा सुखे टुकडो को पूरा सूखा उसका चाम ।।2।।
वैल का जीवन भी था भारी । नही की स्वामी से गद्दारी
पक कीचड़ से करदी पार भार से अति वोझिल भी गाडी
जोता खेत तृणो को खाकर, क्या नही सेवा यह निष्काम ।।3।।

दो अवस्थाए बनी, उदय व अस्त । एक मे मस्त व एक मे त्रस्त ॥स्था.

सूरज उगता, उसका तेज प्रताप
तुरत भाग जाता जैसे, अधेरा रुपी पाप
वडी शान से चलता ही, रहता है आगे
उसका ही हो गया ज्यो केवल अभ्यस्त ॥ 1 ॥

अस्त पर करे न कोई उसके शुभ दर्शन
ज्यो ना कभी रहा, रहेगा उसका कोई शासन
ऊगेगा या नही कलके लिए हुवा संशय
मानो जग परम्परा इससे है आश्वस्त ॥ 2 ॥

सम्मान लिए है इक, एक मे अपमान
स्वत होवे अभिशाप, या बने वरदान
जैसा करे प्राप्त वैसा ही हो जाए फल
इसी प्रकार सोचते नर नारी समस्त ॥ 3 ॥

ऐसे ही मानव की मौत जनम बने
वात न कोइ मौत की, मौत से पूर्व सुने
मसान ले जाने की मरते ही बारी
अपनेपन के लगाव को, कर देते निरस्त ॥ 4 ॥

परन्तु दशाए दोनो, अवश्य वनी रहती
हर्ष, शोक दुनिया मन से, वेमन से भी सहती
ध्यान न देता कोइ, पर है सच्चाई
खुशी एक में है होती, एक मे होते सुस्त ॥ 5 ॥

जाना आना, आना जाना, इस जग की तो यही रीत है
नही जाना तो जान ले अब भी, अवसर मिला पुनीत रे ॥
स्टेशन पर रे गाडी आती । वापिस एक तरफ छुट जाती
यही पूर्व निर्णीत रे ॥1॥

हाट बाजार मे जन बहुत आए । लेदे सारे निज घर सिधाए
अल्प समय की प्रीत रे ॥2॥

खेल खेलने आए खिलाडी । खेल खेलकर चढ गए गाडी
ले ले जीत फजीत रे ॥3॥

जन्म-मरण का आवागमन है । कही सूखा कही खिलता चमन है
रुदन कही कही गीत रे ॥4॥

धर्मशाला से जग नही कम है । आए गए का हर्ष न गम है
गरमी हो चाहे शीत रे ॥5॥

❖

जलता यह श्मशान बताए, यहां न कोई रहता स्थिर
सभी चले गए राह हमारी भी जाने की वही आखिर ॥स्था.॥

डेरा इसमे लम्बा डाल रहा है कुछ तो सोच अरे
लिए तुम्हारे श्रेय यही है, उडजा पछी चोच भरे
आगे काम आयगा निश्चय, करे वहा तेरी खातिर ॥ 1 ॥

भूल गया यदि इसी बात को, तेरा जाना हो खाली
सम्बल विना पडे पछताना, कैसे होगी रखवाली
कौन तुम्हारा सहयोगी हो, एकबार सोचो तो फिर ॥ 2 ॥

समय अभी भी बचा हुआ है, करलो जो कुछ भी करना
क्यो ऐसा सोचे बैठे हो 'नही पडे मुझको मरना'
भार उतार शीघ्र हल्का हो, पाप चढाया क्यो है सिर ॥ 3 ॥

बड़े बड़े महारथी चले गए, उलट-फेर मे था विश्वास
नाम निशान बचा भी या नही चाहो तो देखो इतिहास
पड़ जाती है कहीं-2 तो, अति होशियारी मे किरकिर ॥ 4 ॥
आज तुम्हारा यदि अच्छा है, इसे श्रेष्ठतर मानो बात
कल सुधारने का अवसर है, उसमें हो सकते निष्णात
यही सफलता कहलाए 'हो करनी कभी न मूक बधिर' ॥ 5 ॥

आए थे वे चले भी गए, दुनिया की यह ही रीत
आज एक का कल अन्यों का, तद्रूप या विपरीत ॥स्था॥

एक एक जीवन मे अनेक हो सकते अनुबन्ध
केवल वर्तमान का ही निभ सकता है सम्बन्ध
इसे मान लो स्व-वंश परवश अथवा हार या जीत ॥ 1 ॥

आना जाना ही कहलाता चौरासी का फेरा
कब कोई कौटुम्बिक जन कब कोई का रहे घेरा
कोई तो अविनीत भी होते, कोई बने विनीत ॥ 2 ॥

मान न करे आजपर उसका जरा नहीं बिगड़ेगा
करता जो अभिमान उसीका बसा जगत उजड़ेगा
सावधान रहने वाले को अवसर मिले पुनीत ॥ 3 ॥

दुनिया यह सराय इसमें आने मे निहित है जाना
रैन बसेरा अल्प समय का क्या अपनाना [illegible]
इसी बनी जैसी स्थिति समझो, तारा-स्वयम् प्रणीत ॥ 4 ॥

जीवन छोटा फिर भी बुराई बैर बांध क्यों मरते
श्रम न करते वो भी ज्यादा, करने मे क्यों मुकरते
यही सुगम [illegible] जो हो न कभी गमगीन ॥ 5 ॥

ताक लगाए खडा है कोई तुझ पर
सभल सभल रे आलस तज मत बैठ अधर ।।स्था.।।

निजी सुरक्षा खुद से करनी होती है
यही जागरुकता की सही फिरौती है
सोना–खोना आंख–भिगोना आ१ से
व्यर्थ न जाए इसीलिए कोई क्षणभर ।। 1 ।।

जो खो देगा, वापिस उसे न पाएगा
कर्म–काल तो अपना रग जमाएगा
खाली हाथो जाना ही अनिष्टकारक
यही हारना कहा जाय जीवन का समर ।। 2 ।।

विवेक की वदनामी यह सवसे वढ़कर
नही पढ़ी तो देख गौर से फिर पढकर
होश सभाल करो कल्याण स्वय द्वारा
यही सुहाना कहलाए जीवन का सफर ।। 3 ।।

साहस वाले अपना काम वना लेते
जीवत से वदले मे उत्तर हैं देते
'कर्म काटना''काल से निर्भय' एक ही वात
उसको ही मिलती सुमार्ग की सही डगर ।। 4 ।।

जो सभलेगा उसका ही सार्थक जीवन
वाट निहारे उसके लिए आनन्द-भवन
ज्योति नगर भी उसका नाम दूसरा है
भले उसे कहदे कोई आजाद–शहर ।। 5 ।।

भोर है स्वागत साझ विदाई । समझना होगा इसको भाई ॥
जीवन का यह क्रव चलता है । आवागमन साथ पलता है
रवि के उदय अस्त से शिक्षा, पाने दी है दुहाई ॥1॥
जन्मा तब जब कष्ट उठाए । 'परवाना' जाने का लाए
कब क्या हो ? अनिश्चित फिर भी, बांटो खूब बधाई ॥2॥
भोर नाम सूर्योदय जाना । अस्त साथ में लिए बहाना
जन्म-मृत्यु की प्रकार वैसी, इसलिए तुल्य बताई ॥3॥
धूप तेज है दोपहरी की । मस्त जवानी इसी चरी की
दोनो ही क्रम चल सकते है, विवेक और ढिटाई ॥4॥
वाद जवानी वृद्धापन है । तन से भी होती अनबन है
मौत निकट ज्यो सूरज डूबे, जाए चिता जलाई ॥5॥

● ● ●

इठलाती बल खाती जवानी, ज्यो बरसाती नदी का पानी
जल्दी जाय उतर रे । गर्व न इस पर कर रे ॥ स्था ॥
वचपन गया, रहे यह कैसे । हो गया है, होगा भी ऐसे
वडी पते की बात कही गई, रहस्यो की चाबी हो जैसे
हो सकता अपवाद परन्तु न मिले उसे अवसर रे ॥1॥
पानी आने से पहले ही, बाधी यदि जाएगी पाल
तभी सुरक्षित समझो यौवन–जल से सचित जीवन-ताल
पथराज से मिली डगर रे । चालू फिर रहे सफर रे ॥2॥
विवेक अनुभव सग रहे तब ही सुन्दर नर–जीवन
इसमे बना सको तो बने मन–उपवन नन्दन–कानन
पाजाए आनन्द घर रे । यह जीवन जाय सुधर रे ॥3॥
वाद जवानी वृद्धापन का तुरत आ रहा बढता दौर
सक्रिय शक्ति क्षीण बने, कर सकते गहराई से गौर
तन पर निकृष्ट असर रे । आलस, प्रमाद चढे सर रे ॥

कुदरत तैंने बदल दिया क्या अपना उशूल
सजा नही देती क्या उसको, जो करता रहे भूल ॥
'नारी' तेरी जात, उसी पर नर कर देता हमला
सदा सदा नही सजा रहेगा, उसका आनन्द-बगला
सबसे बुरी बात यों होना, पूरा नियम उल्लघन
भला तुम्हें चटादो उसको मुह, नाक से धूल ॥1॥
भला आदमी बना हुआ, छिपकर करता अन्याय
'अन्त भला नही कहलाता, तेरा ही दिया अध्याय
देर किए बिन करो किरकिरी, उनकी सारी मौज
सजा पूर्ण पाए वह छोड़े करना ऊलजलूल ॥2॥
नही देर अन्धेर नही है तेरे राज मे किंचित
'सुनते आए ऐसा' सब तुम से है हुवे पराजित
एक बार फिर दृश्य दिखादो, अगर हो सके जल्दी
धरे आदत, काम करे सुना, जो पडता प्रतिकूल ॥3॥
'भय बिन प्रीत नही' बदले यह कभी भी नही न्याय
पहले सोचे बहुत, नए अब खोजो और उपाय
गलती अपनी दोष प्रभु को देना सारे छोड़
करे न परिवर्तन अकाट्य सिद्धांत आमूलचूल ॥4॥
जीवन की दीवार हो ऊची, चोर न घुसने पाए
खुशी पुष्प उस घेरे मे विकसे न कभी कुम्हलाए
सद्गुण बढते जाएंगे दिन दूने रात चौगुने
सुरक्षित उनको रखने बनो ज्यो देवी की त्रिशूल ॥5॥

चलके देखो बढके देखो, आयगा पूरा मजा
नही भय हो जब भी चाहे आए, स्वागत है कजा
मित्रता दोनो मे हो तो सौदा चट पट जायगा ॥4॥
सहारा यदि मिल गया तो ज्योति को पाजाऊगा
आत्मा का साक्षात् कर आनन्द मे ही नहाऊगा
पूर्ण आजादी प्रमाण–पत्रक अमिट सट जायगा ॥5॥

मौत को सन्मानो मतिमान
पक्के पाहुनपन के लक्षण, इसमे है विद्यमान ॥ स्था ॥

जो इससे भय खाता, मरने से पहले वह मरता
अमर वही कहलाता जो मृत्यु से जरा न डरता
अपने द्वारा अपने पाना अभिशाप–वरदान ॥1॥
निश्चित जो होने वाला उसको कोइ कैसे रोके
अनेक बार हो चुका वैसे, तब इससे क्यो चौंके
नही नई ऐसी यह बात है जिससे कोई अनजान ॥2॥
अतिथि साधारण विशेष, सारे सम्मान के लायक
हीनभावना उनके प्रति ना, तो वे भी सुखदायक
बनी रह सके एक सदृश उनकी मधुरी मुस्कान ॥3॥
दे इसको सम्मान हृदय से, वह अपना सम्मान
बुरा–भला इसको कहना, यह अपना ही अपमान
चिन्तन–मनन करे इस पर, मिल जाए तत्त्व महान् ॥4॥
एक बार आवे जीवन मे कैसे वह साधारण
नहीं दोप दो उसे जरा भी, दो तो हो बेकारण
अपनी अपने पास आ सके, बात साफ–आसान ॥5॥

भय करता वह भी मरता, नही करता वह भी मरता
जाने ऐसा फिर भी तो मृत्यु से रहता डरता
साहस अपनाले भय तज, तेरा सफल तभी उद्यम रे ॥4॥
जीवन ऊचाई छूता वह सदा रहे सावधान
प्रतिक्षण सार्थक उसका हो, यो बनी रहे मुस्कान
अन्त समय मे समता रख पालेता धाम–परम रे ॥5॥

❀ ❀ ❀

धूमधाम से आया है तू धूमधाम से जा
रोया है आता आता पर जाता जाता गा ॥ स्था ॥
देख हुए खुश तुम जब आए, अपने और पराए लोग
पीछे से सब याद करे जब जीने हित दे शुभ सहयोग
वैसा कलापूर्ण जीवन जी, सबके दिल पर छा ॥1॥
जीवन उसका क्या सार्थक जो बना सके न स्वय इतिहास
जीवन उसका बना निरर्थक, जो खोदे सबका विश्वास
लाया था यहाँ ढेर जा लेता, सग अनने मे अपार सा ॥2॥
काम तुम्हारे सहयोगी ज्यो ऊचा चढने मे सोपान
कष्ट सहन करने मे सबहित, बन जाएगे वे वरदान
दे यो सब आशीष तुम्हे 'हसते हसते सद्‌गति को पा' ॥3॥
मगल यही मनाते दिन दूने बढते रहें शुभ परिणाम
जीवन चमक जाय ज्योति सा, स्वीकारो सेवा निष्काम
अत ममय मे 'खुशी खुशी जाना है' स्वप्न सजोया था ॥4॥
जन्म भला बन सकता है पर मृत्यु सुन्दर दुस्सम्भव
आगे की अच्छी गति का इस अपूर्व अवसर पर उद्‌भव
लक्ष्य शीघ्रता से मिलता साहस वाले के सम्मुख आ ॥5॥

जन्मना है काम लगना परिसमाप्ति मौत
लोग जानें बाद मे। नाली, नदी या श्रोत
मौत मुह से बोलती, "यह तुच्छ अथवा महान्" ॥4॥
जिन्दगी हीरा बने या राह का पत्थर
मूल्य हो अनमोल या पैरो की खां ठोकर
विगडने वनने का खुद ने जुटाया सामान ॥5॥

❀ ❀ ❀

उमरिया जल्दी बीत रही है, करले जो कुछ भी करना
निश्चित है यह जो जन्मा है, पड जाएगा उसे मरना' ॥ स्था ॥

बचपन खेलकूद मे बीता। रह गया सोता–खाता–पीता
पता नही हारा या जीता
याद कहा से आता तुमको, प्रभु का नाम सुमरना ॥1॥
आई जवानी भर गया जोश/खोया दीवाना हो होश
पाया फिर भी न आत्मतोष
अप्रतिबन्ध हवा की नाइ, रह गया तेरा विचरना ॥2॥
वाद मे पल्ले पड़ा बुढापा। तन ने खो दिया अपना आपा
श्रम अत्यल्प मे भी तन कांपा
महाप्रयाण बचा अब बाकी, लगा काल का घरना ॥3॥
काम शीघ्र आवश्यक करले। सद्करणी कर घट को भरले
'कुपथ गमन ज्यो सांप' से डरले।
वहुत आफतो से वच जाए, कभी न इसे विसरना ॥4॥
अनुभवियो की अनुभव-वाणी/मान सीख उनकी, सुन प्राणी
समता रख, आदत कल्याणी
उनके पद चिन्हो पर चलना ही फदे से उबरना ॥5॥

घट का स्वामी कोई न स्थाई । जैसी तन-चेतन ठकुराई ॥ स्था. ॥

घट के स्वामी हुवे अनेक तब तुम कैसे रह गए एक
रहे यह यही तुम्हें पट जाना, सोचो इसको जगा विवेक
चाहे कुछ भी करो 'हो ऐसो' इससे न चले अधिक चतुराई ॥ 1 ॥

जैसे तन–चेतन की यारी । झूठी दृष्टिगत जो सारी
जिस दिन तन का मोह छूटेगा, उस दिन राह मिलेगी प्यारी
स्थिति मिल जाए निश्चय ऐसी, जैसी आज तलक न पाई ॥ 2 ॥

दोनो का विछोह है निश्चित । इसमें शंका टिके न किंचित
यों होते बीता बहुकाल, सारा जग है इससे परिचित
फिर भी मोह न छूटे । क्यो हो? जागो, सोचो, समझो भाई ॥ 3 ॥

जिस दिन अपनापन तोडोगे । चकाचौंध से मन मोडोगे
उस दिन सारा जग हो तेरा, खुद से अपनापन जोडोगे
छोड़े से मिल जाए सब कुछ, यह इस जग की ही अधिकाई ॥ 4 ॥

नहीं जाने इसको सद्ज्ञानी । नही समझना हो नादानी
अब तक होता तो ऐसे ही, बहाव में बहता ज्यों पानी
अब विवेक एवम् सद्बुद्धि, काम मे ले लो बढे सवाई ॥ 5 ॥

● ● ●

क्षण-क्षण सदा छूट जाए । सपना सो समझाए ॥ स्था. ॥

सावधान प्रत्येक घड़ी रहो, व्यर्थ इसे ना खोना
तज प्रमाद रहो जागरूक, जीवन बन जाय सलोना
[illegible] अनुगामी, स्वर्णिम इतिहास सजाए ॥ 1 ॥

जन्मे वे जाय मृत्यु को, स्वीकृति अतीव जरूरी
सच्चे हृदय से इसे मानो, क्यों हो फिर मजबूरी
स्थाई न स्थिर रहने का यह 'अनादि परंपरा बताए' ॥ 2 ॥

'निश्चय होगा' इससे घबरा, पाल रहे क्यो गम को
अभिनिष्क्रमण अवश्यम्भावी, रोक सको ना दम को
रक्षक ग्रसा जाय भक्षक से, आ कोई न बचाए ॥ 3 ॥
छुटकारा पाना इससे यदि, कर्म काट बनो हलका
शीघ्रतया ऐसा करना, नही करो भरोसा कल का
सभाल वालो की साया मे, चले चल पाव बढाए ॥ 4 ॥
बच पावोगे भटकन से करो सत्पुरुषो को याद
करो अग्रगति निर्भय मस्त बन, साथ लिए आल्हाद
मजिल अवश्य पावो आशा यो विश्वास दिलाए ॥ 5 ॥

● ● ●

कल आरी प्रिये ! सम्मान तेरा । शाश्वत जो वरदान तेरा ॥ स्था. ॥
निश्चित तुम अनिश्चित है वह, ऐसी अनादि रीत
फिर कैसे नही तेरे प्रति जोडी जाएगी प्रीत
है सब पर इकसा विधान तेरा ॥ 1 ॥
छिटकाना अपमान जो होता सब जन ऐसा कहते
इन्तजार जहा हो वहा पर ही इक दिन जा रहते
हो भलेई श्मशान डेरा ॥ 2 ॥
जिससे हो अलगाव मेल भी माना जाए जेल
बढे निकटता जिसमे, जेल भी माना जाए मेल
क्यो हो फिर अपमान तेरा ॥ 3 ॥
होनी को अनहोनी माने, अनहोनी को होनी
कहलाता अज्ञान यही, खुद के सग आख मिचौनी
कही टूट न जाए तान तेरा ॥ 4 ॥
डेरा उठाऊ जिसका, उसको अपना मान लिया है
रहा नही विश्वास आजतक, उसका विश्वास किया है
'चितन उलटा' कहा ज्ञान तेरा ॥ 5 ॥

मरना तो है विजय को पाना। ऐसा बनना पडे दीवाना
देहली सफलता की ऊपर तब, चढने हित है पांव वढाना
मौसम मिल जाता मनमाना ॥3॥
शमा परवाने का हो मिलना। ज्योति ज्योति साथ हो खिलना
परमपद वह ही तो कहलाए, पहुँच पाए, कोई मुश्किल ना
मन-वीणा का यही तराना ॥4॥
सच्चा तो है वही परवाना । कष्ट आ पडे भलेई नाना
लक्ष्य को पा लेना हो संभव, अमर वनने हित यो मर जाना
यही तो मस्ताई का बाना ॥5॥

लपलपाता जीभ को वह काल । उसका रखना सदा खयाल
चट करने की आदत उसकी, जान रहा ससार
दया नही उसके दिल मे कुछ माने नही मनुहार
कभी दे फेक किसी पर जाल । कभी पहना देता जजाल ॥1॥
पूरा है चालाक दोष अन्यो के सर पर मढता
कारण विविध वताए उसने, नए नए फिर गढता
नींद सोने का नही सवाल । यही तो सबके लिए ववाल ॥2॥
वाइज्जत यदि रहना चाहो, तोड़ो उसके दांत
सराहनीय होगा सवके हित, तेरा वह वृत्तांत
यही तो खुद के लिए कमाल । हो होनी तुम पे अति दयाल ॥
साहस वाले से डरता वह, उसका वनता दास
जो उससे डरता उसका तो करता सत्यानाश
किसीको कर देता है निहाल । किसीको रखता सजा वहाल ॥
सुन्दर यह सिद्धांत अपूरव, महापुरुषो का कहना
माने इसे न उसके लिए क्या-माने रखे उलहना
करे निज से अपनी सभाल । ज्ञान--वर पा हो मालामाल ॥

इसीलिए सम्मान दो इसको, सदा रहो तैयार
होने वाला जो निश्चित, क्या उसका सोच विचार
डरने वाले पर वह भभके ॥ 3 ॥
जो नही डरे लिए उसके वह, बन जाती वरदान
देना वर्षो का मिटो मे, हो जाता भुगतान
उसकी सौरभ फूल सी गमके ॥ 4 ॥
अत समय की सावधानता, सचमुच बडे काम की
क्योकि वही तो नीव बने उस दुर्लभ मोक्षधाम की
अच्छा समय भजन करो जम के ॥ 5 ॥

●●

रहो जाने को सदा तैयार । देर की जरा नहीं दरकार ॥

वडी खुशी हो रहने मे तो जाने मे भी वैसी हो
छोड पुरानी वस्तु नई को पाले ने मे जैसी हो
जो भी स्थिति आए धीरज से करो उसका सत्कार ॥ 1 ॥
अतिथिवत् जो उसे मानता, मौत उसे भी सन्माने
अन्तरवीणा झकृत हो व रोम लगे सारे गाने
साहस वालो का ही ऐसा, बन सकता व्यवहार ॥ 2 ॥
मृत्यु से भयभीत जरा नही, वह आनन्दित हो वढना
आत्मोन्नति उसकी सुनिश्चित, शिखरो तक भी है चढना
आवागमन रूप घेरा दीखे होता ही पार ॥ 3 ॥
रहना जाना समान जिसके, कहलाने लायक वह वीर
उदाहरण वन सकता अवश्य, वाधाओ को सकता चीर
उसका ही शीघ्रातिशीघ्र होने को है उद्धार ॥ 4 ॥
आना जव जाना वनता तव जाना भी होता आना
पूर्वजन्म व पुनर्जन्म को प्राय. सवने ही माना
समभावो मे नित्य रहे से, जीवन पाए निखार ॥ 5 ॥

सवल लो सग, भार उतारो, जल्दी बढ पावोगे
जब सगीत बजेगा भीतर, आनन्द से गावोगे
उजला मधुर वनेगा जीवन, जरा न रहे कषैला ॥ 3 ॥
नही एक के लिए बात, सबका प्राय' यह हाल
इसे गौर से सोचे सद्गुण पा हो मालामाल
नाम इसीका अमृत मे यो अमृत जाए उडेला ॥ 4 ॥
कुछ क्षण जीवन के ऐसे ही, जो देते सकेत
भूले भटको को कर देते पूरे वे सावचेत
अभ्यन्तर आंखे खुलती, जाए न कभी धकेला ॥ 5 ॥

❀ ❀ ❀

लगन का पक्का है परवाना । विजय पा लेना या मर जाना ॥स्था॥

कीट साधारण की यह बात । इधर मानव प्राणी प्रख्यात
विवेकी होते हुवे प्रमादी, ज्यो तम आच्छादित परभात
वुद्धिदाता को पडता पाना । लज्जास्पद हो सकता ताना ॥1॥
कीट यह झपा खूब लगाता । दीप पर दौडा उडता जाता
दीप की वाती या बुझ जाती । या फिर जला उसे खा जाती
देखनेवाले कहते 'ना' 'ना' न कर यह काम बडा बचकाना ॥
शिक्षा इससे ही यो मिलती, लगन ऐसी जो दिल मे पलती
काम उसका होने मे न देर, सफलता आनन्दित हो निकलती
मानले इसे न कोई वहाना । होता ऐसा कोई मस्ताना ॥
जन्मने के सग मरना निश्चित । अतर इसमे नही कथचित
इससे डरना भी तो मरना, इसी होनी द्वारा आतकित
पता नही क्यो है वह दीवाना । देख हालत जग बने डराना ।
अगर साहस हो तेरा अपना । छूटे फिर तो झूठा सपना
महापुरुषो को स्मृति मे रक्खो, होता सद्बुद्धि का पनपना
यही आनन्द का श्रेष्ठ तराना । ज्ञान, ज्योति पा हो मुस्काना ।

कौडी ले चितामणी फेके, यह अति भारी भूल
परिस्थिति अनुकूल बनी, ना कर तेरे प्रतिकूल
भटकन मिटा राजपथ से दे मिलवा उपकारी ॥ 4 ॥
मत घवरा वाधा अडचन भी अगर राह को रोके
ऊचा चढने भली व्यवस्था करते समय टोके
धीरज, सरलपना सग हो निश्चय सद्गति तुम्हारी ॥ 5 ॥

सिकन्दर ! फिर भी कर तेरे खाली
एक दिवस शक्ति इनकी थी अतुलनीय निराली ॥स्था.॥
शोभित थी तलवार जहां पर। आती म्यान से जव थी वाहर
उन हाथो मे थमे न तिनका, हिलना-डुलना रहा वध होकर
विना खून की लगे साफ ज्यो, कहा छिप गई लाली ॥1॥
आज्ञा जिन हाथो से मिलती, वरद वने दिल-कलिया खिलती
जरा इशारा सा होते ही, वडी वडी चट्टाने हिलती
पडी हुई वे आज देख लो, ज्यो टूटी हुई डाली ॥2॥
चक्री–अर्द्ध चक्री भी हो गए। धरती व सागर मे खो गए
इतिहास मे निशान उनके, जैसे भी कर्मो को वो गए
केवल कागज के पन्नो पर सारे प्रतिभाशाली ॥3॥
कर थामे किननी के कर से। देख आज कापे वे डर से
भयावना सा दृश्य लग रहा, इकटक देख रहे भर नजर से
महान् की भी ऐसी हालत, फिर किसकी रखवाली ॥4॥
सोच इसे चेतो रे मानव ! कभी न हो आदत से दानव
ऐसी हालत होत सभी की, सच्ची समझो जरा न अभिनव
जलता हृदय दीप का सारे कह देते दीवाली ॥5॥

भला करे चाहे बुरा करे पावोगे खोजो जिसमे
उतना ही श्रम और समय लगता इसमे व उसमे
कोरी नही यह चीख रे ॥ 2 ॥

भला उदाहरण बनना चाहो, करलो खूब भलाई
निश्चय सहानुभूति पावोगे जग मे बिना बुलाई
याद बने तारीख रे ॥ 3 ॥

जीवन जीना कला हो उसमे, इक रहते भी अन्तर
इस पर गौर करे सोचेगा जिसका भी अभ्यन्तर
पाए सब बिन भीख रे ॥ 4 ॥

एक मौत साधारण होती, एक हो बहुत कीमती
समय समय पर कह गए ऐसा लाखो पुरुष धीमती
हो वह महान् सरीख रे ॥ 5 ॥

पाथेय सग कुछ ले लो तेरा सफर दूर का राही ।
सुस्ती को तिलाजलि दे दो तेरा सफर बने उत्साही ॥

भार अधिक चलने मे बाधक । बनजाना अडचन का वधक
कायर सा उर करेगा धकधक, इसलिए इसकी मनाही ॥1॥
निद्रा, आलस बहन व भाई । लगती आने बिना बुलाई
बहुत अश मे छिपी सचाई, देते है सारे गवाही ॥2॥
भवो भवो की भूख प्यास है । भौतिक सुख की प्रबल आश है
इस कारण बैठा उदास है, कैसे स्थिति जाए सराही ॥3॥
भोजन पानी खूब खुशी का, साथ रहै से भय न किसी का
जो दाता उपकार उसी का । यो हो जाती मनचाही ॥4॥
आगे काम आयगा निश्चय । तब क्यो ना होना हो निर्भय
प्राप्त सुफल मे पुलकित हो हृदय, मौज करो ज्यो शाही ॥5॥

नरजीवन की मिली निशानी । बनवालो इसकी लाशानी ।
बडी कठिनता से सम्प्राप्त जो, न अच्छी करनी नादानी
बनी कसौटी जहान । कैसे रहे अनजान ॥ 4 ॥

महापुरुषो की याद जमाले । जीवन अपने को चमकाले
यह हो तेरे वश की बात, गुण उनके तन्मय हो गाले
बनी रहे मुस्कान । श्रेष्ठ अनुसन्धान ॥ 5 ॥

❖

प्राणो की बाजी लगा सके तो बाजी मार जायगा
यदि खाया आलस चेतन तो बाजी हार जायगा ॥स्था ॥

जीना तो उतना ही है जितनी भी बच गई ऊमर
हार जीत दोनो सम्मुख, जावो जो चाहो लेकर
जीता आमूलचूल जीवन को सुधार जायगा ॥ 1 ॥

गलती से यदि हार को चाहो बिना मौत सा मरना
एक कदम आगे न चले कि आलस दे दे धरना
जैसा चाहोगे वैसा ही हो सस्कार जायगा ॥ 2 ॥

सदुपयोग समय का होगा यदि भजले प्रभु नाम
सफल सभी हो जाए चाहो जो भी करना काम
गति अवरोधक पाप कर्म का हो सहार जायगा ॥ 3 ॥

बिना लाभ का काम न अच्छा, पू जी मूल की टूटे
असावधानी अगर जग की, चोर लूटेरा लूटे
गिना जा रहा अजीव जो वह ललकार जायगा ॥ 4 ॥

अगर खून मे जोश तेरे तो, बनकर रहना वीर
करो कार्य शीघ्रातिशीघ्र जब तक है स्वस्थ शरीर
सभी किया तेरा बाद मौन के हो चमत्कार जायगा ॥ 5 ॥

बदले रुख वायु अभी इधर कभी किधर की चले
फूलो की सुवास लाती कही बदबू नाक मले
त्योंही आ रहा श्वास अन्य स्थान हित मुड जाए ॥ 4 ॥

अति श्रम करते भी चिरस्थाई रहने का नही काम
इसमे फेर नही पडने का, 'जाना हो परधाम'
प्रयास सारा विफल ज्यो हो गोबर-गुड़ जाए ॥ 5 ॥

❀ ❀ ❀

परवाने ! शमा जल रही । मत जा रे ले मान कही
जल जाएगा तेरा मकान । उठ जाएगा नाम निशान ॥

बहुतेरे मर गए आजतक, जिनकी नही गिनती पूरी
शिक्षा इसमे यह ही मिलती, आवश्यक रखनी दूरी
दीवानापन ही जल मरना, पाना ना कुछ खोना जान ॥ 1 ॥

जल मरना अच्छा ना कहाए, छोडदे ऐसी तू हरकत
पागलपन से जरा न कमती, कैसे बच पाए अस्मत
गौर करन लायक यह बात । न करना बनना नादान ॥ 2 ॥

जायगी बुझ शमा तुरत ही, तेरे उस ऊपर गिरते
भगदड मचेगी महफिल मे, धक्का देते, लडते भिडते
अधियारे का राज बने वहा, अव्यवस्थित हो सामान ॥ 3 ॥

पराजय या विजय तेरी है, कौन उसे देखन वाला
तेरा ऐसे जल मर जाना, होता करना मुह काला
माटी मे मिल जाए तेरी, दिखा रहा जो झूठी शान ॥ 4 ॥

तुरत उसे देती बुझा अगर, उठी हवा तेरे पाखो की
पन कोई मारी बच जाती, उन दीवाने लाखो की
सब कह देते मुक्तकठ से, बुद्धिवान और गुणवान ॥ 5 ॥

भय मृत्यु का बहुत बुरा है। लटक शीश पर रहा छुरा है.
वचना उससे असभव सा, सभव को ले लिया चुरा है
छुटकारा होने का न इससे, देखं घूम जहान ॥4॥

साहस हो फक्कडपन धारो। मृत्यु भय से खुद को उबारो
फिर तो गुलाम हो जाएगी, चाहो तो उसको ललकारो
राजमार्ग के पथिक बनो यदि, कहलावो गुणवान ॥5॥

●●

साथी साथ निभाना।

मजिल की दूरी तै करनी, अटकन इसमे नाना ॥स्था॥

काल अनन्त व्यतीत होने पर, सुन्दर सुपथ मिला है
पौधा बसत पा हर्षित ज्यो, कली बन सुमन खिला है
सौरभ वायु साथ नाचती, मौसम हुवा सुहाना ॥ 1 ॥

ढीले अतर-वीणा के तारो को सहला कसना
स्वर, लय, ताल मिले से होता मानो उसका हसना
जीवन के हर सांस सास मे, निकले मधुर तराना ॥ 2 ॥

सम्मुख आए नव मजिल, पिछली योकर छुट जाए
पैर निरन्तर बढे ताल पर अग्रिम पक्ति पहुँचाए
ज्ञानानन्द, ज्योति, लक्ष्य शक्ति का हो निश्चय पाना ॥ 3 ॥

पावनता का चरम यही है यही सफलता पूरी
चेतनता सह चेतन मिलजा, रहे जरा ना दूरी
धन्य वही दिन हो जिसदिन मिले शमा साथ परवाना ॥ 4 ॥

नरजीवन का सार यही, मिट जाए यदि भटकाव
सर्वश्रेष्ठ सुखद हो अतिम लक्ष्य पे लगे पडाव
केवल इसीलिए यह सारा तन्मय होकर गाना ॥ 5 ॥

पछी उडने को तैयार

पाखो को फडफडा रहा फैलाने करे विचार ।।स्था.।।

कितनी भी मनुहार करे फिर भी जाए वह भाग

हुआ आजतक इसे न आगे जाने का वैराग

ये मौके से मौके से भी

निकल भागता, रहे देखता सदा का पहरेदार ।। 1 ।।

इस तरु पर विश्राम ले लिया लेना था जितना

एक अर्थ यह निकला इससे सस्कार इतना

सुख दुख जो भी मिले मिल गए

सब हैं जाने, नही किसी से कहने की दरकार ।। 2 ।।

आजादी चाहने वाला नही एक स्थान रहता

होनहार जैसी हो मन से वेमन भी सहता

आवागमन रूप बन्धन जब

टूट जायगे तब ही होगा इसका पूर्णोद्धार ।। 3 ।।

जन्म-मरण छूटा बहुतो का,ज्ञानीजन इसे जाने

ऐसा प्रयास की जाने वाली सद्क्रिया सम्माने

आत्मानन्द प्राप्त हो शाश्वत

चकाचौंध भौतिक न सताए, स्वत हो लाचार ।। 4 ।।

होनी कभी न रोकी जाए, होकर ही रहती

साहस से लो काम न हो भय, प्रभुवाणी कहती

बन परमार्थी ही जीतेगा

जीवन का सग्राम, यही पाना अपार का पार ।। 5 ।।

सदा साथ रहने वाले को, क्यो तू भूल गया है
इसे विसर जाने से ही खो तेरा मूल गया है
विलुप्त अगर प्राप्त हो जाए, सपना सच्चा फलता ॥2॥

ज्ञान-शक्ति है असीम अन्दर, अंतर आखें खोलो
अमृत रखने का वर्तन मन, उसमें विष मत घोलो
ज्योति पुञ्ज भीतर मे, वाहर छोटा दीपक जलना ॥3॥

खुद मे पावो सब कुछ यदि खोजोगे पाने खातिर
शीघ्र करो जो समय वीत जाता आएगा कब फिर
'ऐसा पावो जो न कभी खोवो' सोचे वह सभलता ॥4॥

चमत्कार मानव-जीवन का, प्राप्त हो गया यदि यह
वार वार जन्मना मरना छूटे, है जो भयानक
छोटी सी बुद्धि मेरी मे, निष्कर्ष यही निकला ॥5॥

❖

जन्म मरण दो तटो बीच, वहे जीवन नदिया

मौसम वहार खिजा बीच, वसी जीवन वगिया ॥स्था.॥

इस रहस्य को जान गया तो स्थिति-हो जाए जानी
विवेक को यदि साथ रखो तो वनती अमर कहानी
अपनालो चाहे जिसे उदासी, खुशी सजनिया ॥1॥

डर न अगर हो तो मरना भी जीने से कुछ कम नही
हुवा यदि वह मृत्यु ही है, उस जीने मे दम नही
पाई हुई छूट जाएगी सरल साफ डगरिया ॥2॥

पतझड मे भी खुश जो रहता, उसके लिए वसंत ही
विद्यमान सदानन्द वहा पर, दुख सारो का अंत ही
हो जाए व्यतीत खुशी लिए पूरी सारी उमरिया ॥3॥

सावधान जो सर्वदा रहता, गहरा मालामाल है
हल हो जाता सारा सोचा प्रत्येक दिली सवाल है
उसकी मैली गंदी न हो, रहे उजली सदा चदरिया ॥4॥

मजा जिन्दगी का यह ही भक्ति जीवन-रस जीने से
विनम्रता का गुण अपना लागे हो सा मन जीने से
करे अपूर्व आनन्दानुभूति, सुन तेरी भली खबरिया ॥5॥

मर कर भी वह हुआ अमर।
जिनकी याद मे अगणित करते दु:ख अगर
वक्त पे आता जो सबके काम। रटते वे उसका ही नाम
'उसकी आत्मा को शांति मिले' यो बोलें वे हर प्रात शाम
मुक्त कठ से बिना उजर ॥1॥
सेवा जिसकी है निष्काम। थके दुखी का वह विश्राम
याद युगो युगो तक ताजी, लगे उदाहरण जीवन का तमाम
कैसा अच्छा दिल पे असर ॥2॥
समय मृत्यु की है निश्चित। इसमें न अन्तर कथचित
भला बुरा मरने के बाद मे, जब स्थितिया जाए चर्चित
दिलो मे जैसे कर गए घर ॥3॥
काल सभी को देता दाव। व्यर्थ मूछ के लगावो ताव
चले औषधालय यदि खुद का, मिटे न फिर भी दिल का घाव
रखो न दवा लेने मे कसर ॥4॥
करना जो भी शीघ्र करो। घट विवेक सद्गणो से भरो
काल भागता भी यदि आए, चाहे जैसे भी प्राण हरो
चेतन चेत बुद्धि आगर ॥5॥

●●

पक्षी का रैन बसेरा सदृश ही है यह ससार
फिर डेरा लम्बा देने का किस लिए करो विचार ॥स्था.॥
यह जीवन है चन्द दिनो का, पड़े अन्त मे जाना
गुमान इसका करे भूल है, स्थिर इसको क्यों माना
चलाचली मेले का मुद्रित चलाचली इश्तहार ॥1॥
बड़े बड़े युद्धों को जीता, माना उसे प्रमोद
लम्बा आयुष्य भोग समा गए, मिली धरा की गोद
तन चेतन का साथ अल्प अब, चिन्तन योग्य विचार ॥2॥

कायर क्या पाएगा खुद, अन्यों को भी क्या देगा—
चुंधिया जाए चकाचौंध मे, प्रमाद मे उलझेगा
छुटकारा पाना दुस्सम्भव। अपनाया जो भ्रम है ॥5॥

❖

इस बिजली का कर न भरोसा, बुझ जाती जलती जलती
क्षण मे अंधेरा क्षण मे उजाला, निगलती और उगलती ॥स्था॥

करते हो प्रारम्भ काम कोइ, रात अंधेरी दुखदायी,
दीख जाय इसलिए जलाई बत्ती उलझन सुलझाई
बिजलीघर की कोइ खराबी, रह जाती और निकलती ॥1॥
वैसे इस जीवन का सौदा, मृत्यु से है जुडा हुआ
आज मना रहा खुशी दुःख मे चेहरा हो कभी उडा हुआ
कर्मरेख ऐसी ही गहरी, कर—भर से न बदलती ॥2॥
'सदा रहे सौभाग्य' सोचना, प्राय होता है बेकार
बिना हिचकिचाए अच्छा इसको कर लेना हो स्वीकार
तभी तुम्हारी हालत बच पाएगी रही फिसलती ॥3॥
समझाने वाला नही घोल पिलादे उसे पचवादे
नही किसी की मजाल, आफत आई से बचवादे
खुद की ही चेष्टा मे कुछ हो सकता, सुधरे गलती ॥4॥
समय मिला उसको योंही जो खोदे वह पछताए
ऐसा क्यो सोचे बैठा फिर गया समय आजाए
यही मूल जो बहुत बढी की कमी हुई क्या सभलती ॥5॥

खिण खिण रो साथो दीन्या रो, अलग पणो नही याद
सोणो, उठणो और जागणो भेळो हो लखदाद
आज करे क्या वाद
रुठ गयो माने नही मानी, कर लीन्या जतन करोड़ ॥2॥

सुगन्ध री लपट्या उडी लगा साबण तेल फुलेल
नित्य नया सिणगार सजाया, बाज्या मारु–छैल
तोभी बिगड्यो खेल
मन सूं भरता हाजरी भी, लीन्यो मुंह मचकोड ॥3॥
परदेशी री प्रीत अधूरी, मत करज्यो विश्वास
आतो आतो ही रुक जावे, ओ साथीडो सास
टूटी घणा री आश
पछी ज्यां पिंजरो तज देवे, बदल लेवे निज ठोड ॥4॥

दोन्यां रो साथो जद ताई, ले लो इण सूं काम
बिछुड्या फेर मिलेला जद ही, बोलीजेलो नाम
उलट फेर है तमाम
सोच सोच पग धरसी वोही, बण जासी सिरमोड ॥5॥

मिल्यो बिछुडग्यो, आयो गयो है, इण जग री आ रीत
एक दिवस पछताणो पडसी, जो करसी परतीत
हार ने मानली जीत
काल वो गयो आज ओ गयो, लागी दौडादौड ॥6॥

जन्मे गावे गीत मरे रोवे दे बांगा पाड
च्यार दिना रे बाद बराबर, ज्यां नही हुवो उजाड
ना तिल ना कोई ताड
नया पुराणा स्यूं नाना–रिश्ता लेवे तोड जोड ॥7॥

हसो मान सरोवर वासी ।

बुगले ने जग हसो जाणे, रुक रुक आवे हासी ।।स्था।।

ताल भर्यो है कमल फळां सू, फूल भी सूर्य विकासी
शोभा देखण आवे आख्यां, सुन्दरता री प्यासी ।।2।।

बुगले जळविच ध्यान लगायो, हो ज्या सत उदासी
फूल फळा ने कुण सू घे वो पकड माछली खासी ।।2।।

क्षीर-नीर आधो आधो पण बुगलो बेगो उडासी
रग एक मे के होणी, वाता वेमेळी खासी ।।3।।

हंसो चुगसी तो मोती, नही तो निरणो रै जासी
नीर अलग वेने तो केवल दूध दूध ही भासी ।।4।।

शिव गति मानसरोवर बाजी, चेतन हस गिणमी
वक-रुपी खोटो मन जग मे राफड रोल मचासी ।।5।।

जाणो दूर तो भार घटाले, जोखो मत ले सागे

गाडी छूटण री तैयारी, ठेसण और भी आगे ।।स्था ।।

सागी टेम लगाई दौडादौड मार्ग न समतळ
खाडा मूं वचणे मे चक्कर, कांटा-काकर तूं टल
कुण दे देसी वेंत वलद क्यू मू ढो हारण मागे ।।1।।

सगळा रा पथ न्यारा न्यारा, सागी एक पडाव
सागो हो या रेवे एकलो, अणचीत्यो ही वढाव
सारां रे ऊतावळ वोही भागे वोही भागे ।।2।।

सुमरण कर भगवन्ता रो वोही हो जासी सवळ
कावळ होवण वाळी होणी मो हो जासी सावळ
सीधे रो घट प्रभु रो वासो, जद ही सुभाग जागे ।।3।।

बीती रात बच्यो झाझरको । मिटतो झण्णाटो झालर को ॥
फुरती कर दिन ऊगणवाळो । इन घर रो जारयो रुखालो
खडके मे कुण सुणसी खडको ॥1॥
जीमण वेळा पेट न भरियो । नखरा करणे पर उतरियो
करनो रै अवे फीको चरको ॥2॥
झाजर वाज रही मिदर मे । पछो तडपरयो पिंजर मे
झण्णाटो रुकग्यो पछी फडफडकर मारगयो फड़को ॥3॥
दोप नही पिंजरे रो इक दिन । होणी होसी चेताया विन
रेवे न पावणो वदीवार को ॥4॥
बेन सके तो बोत बधाई । वेळा रो होवे अधिकाई
भली रात रो आछो तडको ॥5॥
जीवन ओ सगीत वणाले । आतमा सागे साज वजाले
जाणकार हो प्रगति—स्वर को ॥6॥
प्रभु भजले आछी आ वेळा । शुभ सयोग रा होसी मेळा
भागे भून दुर्गति के डर को ॥7॥
भटकण मिट जावेली सारी । वण जासी तू अचरजकारी
हो हकदार परम गति वर को ॥8॥

● ● ●

इच्छा ने पाया मूर्तरुप सहयोगिनी हो गई एक कलम
पर लिखने वाला अल्पबुद्ध, शब्दो की सज्जा अतीव कम
भावो की बाढ न रुकपाई, दिल-कागज बना सुरम्य ताल
निमित्त मैं तो बन ही गया, वे आदरणीय बने माध्यम ।

● ● ●

जिनकी केवल अब याद बची, चरणो मे उनके लाख नम
दू इसके सिवा क्या ? दूरीका, यह ही तो निकटपन और मिल

—गुलाब चन्द वैद
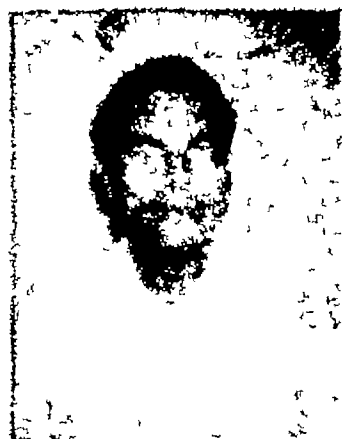
jनसेवा की आपकी
उत्कट भावना को ही
अपने लिए राजपथ
माना है मैंने।
समुचित ढग से
निभा सकू इसे
यही मातु श्री व पिता श्री
के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी—

शुभकरण वैद

मौन रहने की आपकी
सद्‌शिक्षा–पालन का
अभ्यास आगे बढाऊ
इसे आपसे पाई शुभ दृष्टि
मानती हूं।

गवरजा नाहटा

पुस्तक प्राप्ति स्थान :--

(1) श्री सम्पतलाल वैद । प्रकाश मेडिकल हाल बाइसी
प्रकाश इलेक्ट्रोनिक । गुलाब बाग
(पूर्निया)

(2) श्री मानिकचन्द वैद । अरिहन्त मेडिकोज–गुलाव बाग
(पूर्निया)

(3) श्री अनोपचन्द वैद । अरविन्द स्टोर–गुलाव बाग
(पूर्निया)

(4) श्री शुभकरण वैद । किशोर वस्त्रालय–बाइसी
(पूर्निया)

(5) श्री कमलचन्द वैद । मनोज स्टोर-बाइसी
(पूर्निया)

(6) श्री राजकिशोर वैद.... ....